सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

• वर्ष : 15 • • अंक : 3 • • 5 जून 2018 • • मूल्य : 20रु. •

श्री इन्दौर नगरे

चातुर्मासार्थ भव्य नगर प्रवेश महोत्सव

पावन निश्रा
पूज्य गुरूदेव गच्छाधिपति
आचार्य प्रवर
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी
म.सा.
आदि ठाणा 6

शुभ मुहूर्त
वीर सं. 2544 वि. सं. 2075
आषाढ़ सुदि 10
रविवार
ता. 22 जुलाई 2018
प्रातः 8.00 बजे

पावन सान्निध्य
पूज्य महत्तरा पद विभूषिता
श्री विनीताश्रीजी म. ठाणा 3
पू. महत्तरा पद विभूषिता
श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल

19, महावीर बाग, एरोड्राम रोड़, इन्दौर-452001

फोन : (0731) 2414198

सकल संघ से पधारने की हार्दिक विनंती है।

निवेदक

श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, इन्दौर

जितेन्द्र शेखावत
अध्यक्ष

संपर्क सूत्र
मोहनसिंह लालन - 94250 52766, डुंगरचंद हुण्डिया - 99260 77260
जयन्ती सिंघवी - 94259 10701, दिनेश हुण्डिया - 98270 30961

जयन्ती सिंयणी
मंत्री

बाहर से पधारने वालों से नम्र निवेदन है कि वे हमें अपना कार्यक्रम सूचित करें ताकि व्यवस्था का व्यवस्थित लाभ हमें मिल सकें।

॥ श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः॥ ॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः॥ ॥ श्री महावीरस्वामिने नमः॥

अनंतलब्धि निधानाय गुरु गौतमस्वामिने नमः
खरतरबिरुद धारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः
पूज्य गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

होजरी सिटी

तिरूपुर नगर

की धर्मधरा पर प्रथम बार श्री हेमप्रभाश्रीजी आराधना भवन में
भव्यातिभव्य चातुर्मास प्रवेश के प्रसंगे भावभरा हार्दिक आत्मीय आमंत्रण

मंगल पवेश
22 जुलाई 2018, आषाढ़ सुदि 10, संवत् 2075, रविवार

आज्ञा प्रदाता
प.पू. गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभ सूरिश्वरजी म.सा.

प्रत्यक्ष आशीर्वाद
प.पू. विदुषीवर्या कल्पलताश्रीजी म.सा.

दिव्य कृपा
प.पू. महानआत्मसाधिका श्री अनुभवश्रीजी म.सा.
प.पू. सुप्रसिद्धव्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा.

पावन सान्निध्य

तिरुपुर संघ की परोपकारिणी प.पू. गुरुवर्या हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्यायें
प.पू. प्रियंवदाश्रीजी म.सा., प.पू. शुद्धांजनाश्रीजी म.सा., प.पू. योगांजनाश्रीजी म.सा.
प.पू. प्रमुदिताश्रीजी म.सा., प.पू. संवेगप्रियाश्रीजी म.सा., प.पू. मननप्रियाश्रीजी म.सा.

आदि ठाणा–6 का महामंगलकारी चातुर्मास करवानें का सुनहरा पुनित अवसर हमें प्राप्त हुआ हैं।
इस अवसर पर पधारने हेतु आपकों हमारा भावभरा आमंत्रण हैं।
आपके परिवार के आगमन से संघ शासन का गौरव बढ़ेगा।
चातुर्मासिक प्रवेश की शुभ वेला में आप सभी पधारकर संघ शासन की शोभा बढ़ावे।

निवेदक
श्री पार्श्व कुशल जैन सेवा ट्रस्ट
कुरुंजी नगर एक्सटेंशन, शरीफ कॉलोनी,
तिरुपुर (तमिलनाडु)

चातुर्मास स्थल
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय एवं श्री जिनकुशल सूरि दादावाड़ी
श्री हेमप्रभाश्रीजी आराधना भवन
कुरुंजी नगर एक्सटेंशन, शरीफ कॉलोनी,
तिरुपुर (तमिलनाडु)

संपर्क सूत्र

बाबूलाल सिंघवी	रतनलाल बोथरा	रतनलाल सेठिया	सोहनलाल बोथरा
9543315477	9488151000	9443349738	9363049828

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

दंतसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं।
अणवज्जेसणिज्जस्स गेण्हणा अवि दुक्करं।।

दंतशोधन आदि को बिना दिए न लेना और दत्त वस्तु भी वही लेना जो अनवद्य और एषणीय हो, इस व्रत का पालन करना बहुत कठिन है।

One should retrain from taking even a trifling thing like a toothpick without asking its owner, it is therefore very difficult to observe this rule of accepting only those things that are duly given and are free from blemish and really acceptable.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. सोलह सतीयाँ कथानाक भाग 3	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	05
3. बाबु मन्दिर की यात्रा	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी	07
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	10
5. गुरु क्यों जरुरी है ?	साध्वी शुद्धांजनाश्री	12
6. श्रद्धांजलि स्तवन	साध्वी प्रमुदिताश्री	13
6. शब्दों की मुक्तावली में गुरुवर्याश्री..	साध्वी मननप्रियाश्री	14
7. समय प्रबंधन जीवन का सबसे महत्पवूर्ण अंग	प्रोफेसर रमेश अरोड़ा	15
8. प्रकृति के नियम	संकलन	15
9. समाचार दर्शन	संकलन	16
10. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	38

इन्दौर नगरे

पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य देव

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

आदि साधु-साध्वी मंडल का

चातुर्मास प्रवेश

ता. 22 जुलाई 2018 रविवार प्रातः 8.00 बजे

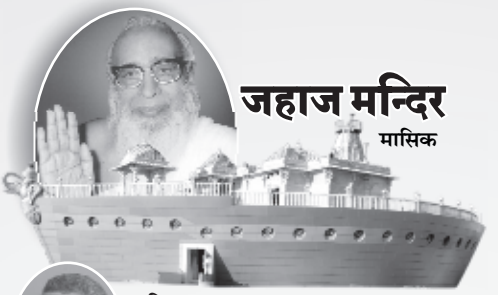

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 15 अंक : 3 5 जून 2018 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :

डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री
कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें।
मो. 094447 11097

नवप्रभात

जीवन की गाडी सफलता व विफलता इन दोनों पटरियों पर गुजरती है।

जीवन में सदा सफलता नहीं मिलती तो सदा विफलता भी नहीं मिलती।

कभी सफलता प्राप्त होती है तो कभी विफलता! पर समस्या परिणति के क्षण में उपस्थित होती है।

सफलता मिलने पर व्यक्ति इतराता है... बौरा जाता है... अपने अहंकार का उद्घोष करता है!

विफलता मिलने पर रोना, भीतर ही भीतर घुटना, उदास होना... आरोप लगाने की दशा का अनुभव करना... शुरू हो जाता है।

सफलता में व्यक्ति अपने पुरूषार्थ की प्रशंसा करता है।

विफलता में व्यक्ति दूसरों को निमित्त मानता है। वहाँ वह अपने पुरूषार्थ को गौण कर देता है। या यों कहें कि अपने पुरूषार्थ को सही ठहरा कर किसी और पर अपनी असफलता का आरोप मढता है।

पर उन क्षणों में उसे बहुत गहराई से अपने दृष्टिकोण को थोडा विशाल... विराट्... बनाकर उसका विश्लेषण करना चाहिये।

सोचना चाहिये कि यह जीवन का एक हिस्सा है। और जब दो व्यक्ति एक ही दिशा में पुरूषार्थ करते हों और सफलता किसी एक को ही प्राप्त होनी हो तो एक व्यक्ति को तो असफल होना ही है।

ऐसी स्थिति में सकारात्मक चिंतन का विकास जरूरी है। उसके अभाव में व्यक्ति के अवसादग्रस्त होने की संभावना बढ़ सकती है।

उसे चिंतन करना चाहिये कि मैंने परिश्रम तो किया ही है। मैंने अपनी ओर से तो सफल होने का ही प्रयास किया था। नहीं हो पाया, यह योगानुयोग है।

और एक बात तय है कि सफलता मिले या विफलता दोनों ही परिणाम इस बात की घोषणा करते हैं कि उस व्यक्ति ने परिश्रम तो किया ही है।

उसे ऐसा सोचना चाहिये कि विफलता इतनी ही मिली। इससे ज्यादा भी मिल सकती थी। यह मेरा सौभाग्य रहा कि तलवार का घाव कांटें में निकल गया।

क्योंकि विफलता की एक सीमा है। विफलता अनंत नहीं है। जितनी विफलता मिली है, उससे ज्यादा भी मिल सकती थी।

जितना नुकसान हुआ, उससे ज्यादा भी हो सकता था। यह सोच व्यक्ति को पुनः पुरूषार्थ की दिशा में बढ़ने की तीव्र प्रेरणा है।

सोलह सतीयाँ
कथानक
5

विलक्षण वैराग्यवती सती सुन्दरी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे...)

चक्र की अपनी मर्यादा थी। वह भाई का वध कैसे करता । अतः बाहुबली की प्रदक्षिणा देकर वह प्रत्यावर्तित हो गया पर अब बाहुबली का कोप आसमान को छू रहा था।

मेरा भाई होकर मुझ पर ही चक्र का प्रयोग करता है और वह भी मर्यादा का उल्लंघन करके।

सिंह की भाँति बाहुबली गरज उठा-भरत! मर्यादा को तोड़ने वाले नामर्द होते हैं। वीर प्राण दे देते हैं पर अनुशासन से बाहर नहीं जाते। आज तेरे अपराध पाप की सजा तुझे भोगनी ही होगी।

भरत सामने आती मौत को देख रहा था। बाहुबली की बलशाली मुष्ठि उठी और चारों तरफ हाहाकार मच गया।

इतने में आकाशवाणी हुई- बाहुबली! अग्रज पर प्रहार करना शोभा नहीं देता। इससे तेरा अपूर्व बल गौरवान्वित नहीं अपितु कलंकित ही होगा।

अग्रज पर प्रहार करने के लिये इतिहास तुझे कभी माफ नहीं करेगा। उठी हुई मुष्ठि खाली कैसे जाती। उसी मुष्ठि से देखते-देखते बाहुबली ने केश लुंचन कर दिया। वस्त्राभूषण त्याग कर वहीं ध्यानस्थ हो गये।

जनसमूह ने विस्मित आँखों से आँसू बहाएँ। भरत का निवेदन भी विफल गया।

चक्रवर्ती, राजा, सैन्यदल सभी लौट गये श्रद्धा का अर्घ्य अर्पित कर।

बाहुबली के मन में आया-प्रभु ऋषभदेव के समवसरण में जाता हूँ।

तुरन्त मन बदला-नहीं....नहीं....! वहाँ अनुज मुनि भी तो हैं। मैं अग्रज, और अनुज मुनियों को वंदन। यह मुझसे सम्भव नहीं होगा।

जब केवलज्ञान जो जाएगा, तभी जाऊँगा ताकि वंदन-व्यवहार का प्रश्न ही नहीं रहेगा।

मुनीन्द्र ध्यान में मेरू की भाँति निश्छल थे।

न बोले, न डोले !

न चले, न हिले !

पक्षियों ने घौंसले बना दिया। लताएँ शरीर से लिपट गयी।

सर्दी आयी !

सूरज तपा !

पानी बरसा !

पर मुनीश्वर की साधना निराबाध गतिमान थी।

अब लगभग एक वर्ष पूर्णता के निकट था।

ऋषभदेव ने कहा-ब्राह्मी! सुन्दरी! जाओ! बाहुबली की साधना केवलज्ञान के निकट पहुँच चुकी है। उसके मानसिक अभिमान का शल्योद्धार कर अन्तर्तम को विनष्ट करो।

ठूंठ की भाँति निश्छल ध्यानस्थ महामुनि !

उनके शरीर का स्पर्श पाकर पवित्र हो रहा अवनिमण्डल....नभमण्डल!

दोनों बहिनें भ्राता मुनि के सन्निकट पहुँची और कहने लगी-वीरा मोरा! गज थकी उतरो। गज चढ्या केवल न होसी रे।

'वीरा' शब्द सुना और बाहुबली का ध्यानक्रम खण्डित हुआ।

ये तो ब्राह्मी-सुन्दरी का शब्द-माधुर्य है।

मुझे गज से उतरने का कह रही जबकि मैंने तो हय-गय-रथ ही नहीं, राजमहल-राजमुकुट भी छोड़ दिये।

बाहर से मुड़कर बाहुबली ने ज्योंहि भीतर में देखा तो समझ गये-अरे! जब मैं अभिमान के गजराज पर सवार हूँ फिर कैसे हो सकता है कैवल्य-रश्मियों का प्रकटीकरण।

मुनि को स्वयं पर पश्चात्ताप हो आया।

सब कुछ छोड़कर भी मैं ज्येष्ठ-कनिष्ठ की व्याख्या में उलझा रहा। नहीं....नहीं....अभी जाता हूँ प्रभु के समवसरण में। बाहुबली के कदम उठे और सयोगी केवली गुणस्थानक में पहुँच गये।

देव-दुंदुभि के निनाद से अम्बर गूंज उठा। पुष्प-वर्षा से धरा महक उठी।

तत्काल विहार कर मुनि समवसरण में पहुँच गये। दीर्घकाल पर्यन्त संयम पालकर अन्त में सुन्दरी ने भी सुन्दर मोक्ष-नगर में प्रवेश पाया।

ब्राह्मी-सुन्दरी के भव

देहातीत साधना का अखण्ड धाम महाविदेह क्षेत्र

ख्यातिप्राप्त शान्तिपुंज क्षितप्रतिष्ठित नगर !

इसी नगर में रहते हैं-राजपुत्र महीधर, मंत्रीपुत्र सुबुद्धि, वैद्यपुत्र जीवानन्द, श्रेष्ठिपुत्र पूर्णभद्र, शीलपुंज और केशव कुमार।

इन सभी की मित्रता इतनी प्रगाढ़ कि पुष्प से पराग अलग हो तो मित्रता में दरार हो।

खाना-पीना एक साथ!

रहना-बैठना एक साथ !

एक के सुख में सब सुखी!

एक के दु:ख में सब दु:खी!

जैसे एक ही मन की छह आकृतियाँ हो।

एक बार क्रीड़ा-उत्सव के लक्ष्य से वे उपवन में पहुँचे और देखा-

एक मुनिराज!

उनके मुख पर चमकती विराग की कान्ति और देह पर भिनभिनाती हजारों मक्खियाँ।

वैराग्यमूर्ति महामुनि के शरीर से अविरल बह रही मवाद की धारा को देखकर छहों अवाक् रह गये। यद्यपि उनके शरीर को छूकर आ रही पवन में इतनी दुर्गन्ध थी कि सहन न हो सके पर पूर्वजन्म के पुण्योदय से छहों मित्रों के मन में जैसे वेयावच्च और सेवा झरणा फूट पड़ा।

एक मित्र बोला-अरे! इनके शरीर की चमड़ी गल चुकी है। ये तो कुष्ठ रोगी प्रतीत होते हैं।

दूसरे ने कहा-देख नहीं रहे, शरीर में जगह जगह घाव हो चुके हैं और उनमें कीड़े कुलबुला रहे हैं, फिर भी मुनिवर समता की प्रतिमा बनकर सहन कर रहे हैं। धन्य है इनका समभाव। परम देहातीत भावों से ओत-प्रोत होकर अपना जीवन सफल कर रहे हैं।

एक मित्र बोला-वैद्यपुत्र! तुम्हारे पिताश्री एक सफल और सर्वश्रेष्ठ वैद्यराज हैं, उनसे भी बढ़कर तुम्हारी चिकित्सा-कला है। यदि मुनीश्वर की चिकित्सा तुम्हारे द्वारा हो जाये तो हमारी जीवन-यात्रा सफल और सुखद बन जाये।

राजपुत्र बोला-वैद्यतनय! हमसे यदि किसी भी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा हो तो हम सानंद तत्पर हैं।

स्वयं जीवानंद वैद्य की आँखें भी प्रसन्नता मिश्रित अनुमोदना से भर आयी-अहो! आज मेरा जीवन, मेरी कला, मेरी विद्या गौरवान्वित होगी। मुनीन्द्र की चिकित्सा के बहाने मेरे अन्तर्मन की भी शल्य-चिकित्सा हो जायेगी।

रोग-मुक्ति के उपायों पर चिन्तन करने के बाद जीवानंद बोला-मित्रों! मुनिवर की चिकित्सा हेतु तीन चीजों की जरूरत हैं और वे भी दुष्प्राप्य हैं।

- कौनसी तीन वस्तुएँ?

रत्न कम्बल, गौशीर्ष चन्दन और लक्षपाक तेल। इन तीन अलभ्य वस्तुओं के योग से ही रोग-निदान सम्भव है।

और यह सर्वाधिक जरूरी है कि इन वस्तुओं का मुनि सेवार्थ क्रय न किया जावे। हम श्रावक हैं और हमारा कर्त्तव्य बनता है कि मुनि को निर्दोष चिकित्सा उपलब्ध हो। लक्षपाक तेल मेरे पास उपलब्ध है पर शेष दो वस्तुओं की खोज करनी होगी।

उसके लिये हम तैयार हैं। पाँचों मित्र बोले। पर ऐसी कीमती वस्तुएँ सेवार्थ देने के लिए भला कौन तैयार होगा! और क्रीत सामग्री का साधु के लिये उपयोग नहीं किया जा सकता। पाँचों मित्र झुंझलाहट से भरकर बोले-अरे! तुम भी कैसी बातें कर रहे हो। माना कि गोशीर्ष चन्दन और रत्न कम्बल, ये दोनों दुर्लभ्य है पर अलभ्य नहीं। ऐसे अनुपम अवसर पर हमें निराश नहीं होना चाहिये। खोजने से भगवान भी मिल जाता है तो फिर ये तो पदार्थ हैं। मुनिश्री का पुण्य उनके साथ हैं, अत: हमें अवश्य ही ये पदार्थ प्राप्त हो जायेंगे, ऐसा हमारा मन कहता है।

(क्रमश:)

स्वभाव को दे सरसता
भाषा को दे मधुरता
चिन्तन को दे गंभीरता

बाबु मन्दिर की यात्रा

बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्री

कोई भी सिद्धाचल का तीर्थ-यात्री दादा आदिनाथ की यात्रा करने से पूर्व बाबु मंदिर की यात्रा अवश्य करता है। मैंने भी पालीताणा यात्रा के अंतर्गत बहुत बार बाबु मंदिर जिसे धनवसी टुंक भी कहा जाता है, की यात्रा की थी। जब भी इस मंदिर की यात्रा करते हैं, इसका इतिहास जानने की जिज्ञासा अवश्य उठती है। अभी कुछ वर्ष पूर्व इस जिनालय का शताब्दी वर्ष कार्यक्रम भी मनाया गया था।

यह तो मुझे पता था कि यह एक परिवार द्वारा निर्मित जिनालय है पर यह जानकारी नहीं थी कि इस मंदिर के इतिहास में एक नारी की भूमिका है। नारी-समर्पण ने ही इस संसार के प्रभुभक्तों को इतना विशिष्ट और अनुपम उपहार दिया है। जब मैंने इतिहास के पृष्ठों में इसे पढ़ा तो मेरा रोम-रोम जैसे आनंद के अतल सागर में डूब गया। एक नारी ने अपनी शक्ति को भक्ति में बदलकर अपनी प्रभुभक्ति को कैसा विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया था। जिस प्रभु की उस नारी ने जन्म से ही पूजा की थी, उस प्रभु की भक्ति में अपनी राशि खर्च करने की प्रेरणा देकर उसने एक इतिहास तो रचा ही बल्कि एक संदेश भी दिया कि नारी मात्र संसार के विस्तार में नहीं बल्कि संसार सागर पार होने में भी अपन योगदान करे।

मुर्शिदाबाद शहर पूर्व बंगाल का सुप्रसिद्ध नगर! वहाँ राजा महाराजा की तुलना में खड़े होने वाले अनेक प्रसिद्ध रईस! भावों से भी संपन्न! शान से जीते हुए भी अपनी मर्यादा के प्रति संपूर्ण वफादार! अपने श्रावकत्व के प्रति ईमानदार....

शहर की प्रसिद्धि एवं संपन्नता को इंगित करती सेठ धनपतसिंहजी दुग्गड़ की विशिष्ट हवेली जिसमें परिवार नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति का साकार और जीवंत रूप रहता था।

सेठ धनपतसिंहजी की मातुश्री महेताब कुमारी अपने परिवार को वात्सल्य का सिंचत तो देती ही थी पर उससे भी ज्यादा जैनत्व से, उदारता से, गृहस्थ जीवन के कर्तव्यों से एवं भारतीय संस्कारों से ओतप्रोत करने का सतत पुरूषार्थ करती थी। उसके रोम-रोम में बचपन से ही शत्रुजय तीर्थ एवं उसके अधिपति दादा आदिनाथ के प्रति गजब की श्रद्धा और उतना ही अदृश्य आकर्षण था।

एक रात्रि में शयनकक्ष में नरम-नरम मखमली सुविधा युक्त बिस्तर पर वह सो रही थी कि औचक ही नींद उचट गयी। नींद लेने के भरपूर प्रयास के बावजूद भी वह नींद को अपनी आँखों में न भर पायी। कारण उसके अवचेतन मन में सुषुप्त वर्षों पुराना एक सपना अंगडाई ले चुका था।

उसने सोचा-अरे....। यह क्या हुआ? मैंने परिवार एवं समृद्धि की रेलमपेल में अपने संकल्प को कैसे भुला दिया! जिन्दगी का क्या भरोसा? मुझे शुभ कार्य में देरी करनी ही

नहीं चाहिये थी। यह मेरी बहुत बड़ी भूल हुई है। भूल ही नहीं बल्कि स्वयं के प्रति बहुत बड़ा अपराध किया है। फिर भी कोई बात नहीं। जो हुआ सो हुआ। जो बीत गया उसे में लौटा नहीं सकती पर जो बचा हुआ है, उसे ही मैं अब सार्थक करूं।

उसने मन ही मन निर्णय किया कि अब मैं जल्दी ही अपने मनोगत भाव पुत्र के सामने प्रकट करूंगी और वर्षों पुराने संकल्प को क्रियान्वित करूंगी।

प्रात: सूर्य की रश्मियों ने जब धरती माता का स्पर्श किया तब नित्य नियमानुसार सेठ श्री धनपतसिंहजी अपनी मॉ के कक्ष में चरण वंदना के लिये पहुंचे!

उन्होंने चरण स्पर्श किये पर यह देखकर अत्यन्त अचंभित हो गये कि मां ने सदा की तरह न उन्हें आशीर्वाद दिया है और न उनका मस्तक चूमा है। वे कुछ पल तो सोचते रहे कि उनकी ऐसी क्या गलती हुई है कि मां की ममता नाराज हो गयी है। उन्हें जब अपनी कोई त्रुटि नजर नहीं आयी तो उन्होंने अत्यंत विनय से पूछा- मां आपकी सदाबहार मुस्कान और आशीर्वाद दोनों ही आज गायब है। मुझसे कोई भूल हुई है या आप अस्वस्थ हैं।

मां ने कहा- बेटा न तुमझे कोई गलती हुई है और न मैं नाराज हूँ। बस एक विचार ने मेरे अस्तित्व को इस कदर अपनी गिरफ्त में ले लिया है कि मैं तेरी उपस्थिति का भी अहसास नहीं कर पायी।

पुत्र ने अत्यंत विनित लहजे से पूछा- मां! अगर आपको एतराज न हो तो उस विचारधारा में मुझे भी भागीदार बना दीजिये।

मां ने कहा- हकीकत में तो वह एक मनोरथ है। बात तेरे पिताजी के समय की है। जिस समय तेरे पिताजी के साथ वर्षों पूर्व पालीताणा की यात्रा पर गयी थी उस समय तीर्थाधिपति दादा आदिनाथ के दर्शन करते-करते मेरे मन में भी एक शुभ विचार उठा था कि मैं भी अपने हाथ से यहाँ एक भगवान बिराजमान करूंगी। कितना अच्छा वह क्षण होगा, जिन क्षणों में मेरे हाथों से एक भगवान यहाँ बिराजमान होंगे। संयोग से मैं तेरे पिताजी से अपने मन की बात कह भी नहीं पायी और यहाँ आते ही तेरे पिताजी का अचानक स्वर्गवास हो गया। बेटा! मेरी भी अब उम्र पर्याप्त हो गयी। फिर काल उम्र का मोहताज कब होता है। बेटा! मैं मृत्यु का स्वागत करने से पूर्व अपने इस शुभ मनोरथ को पूरा करना चाहती हूँ।

अत्यंत उल्लास के साथ बाबु धनपतसिंहजी ने अविलंब कहा- मां तुम चिन्ता मत करो! बस यह समझो कि आपके द्वारा एक भगवान नहीं बल्कि संपूर्ण शिखरबद्ध मंदिर तैयार हो गया है। पुत्र द्वारा संपूर्ण मंदिर निर्माण का आश्वासन पाकर माँ जैसे निहाल हो गयी। उसे आज अपने मातृत्व पर नाज हो उठा। वह मन ही मन उन क्षणों की कल्पना में खो गयी जिंन क्षणों में उतुंग शिखर पर वह ध्वजा फहरायेगी। वह उन सामान्य हाथों से परमात्मा को गादीनशीन करने का अत्यंत असाधारण कृत्य संपन्न करेगी। उसका रोम-रोम पुलक उठा।

बाबु धनपतसिंहजी ने भी 'शुभस्य शीघ्रम्' की कहावत पर अमल करते हुए तुरन्त ही पालीताणा जाने की योजना को मूर्त रूप देते हुए तैयारी प्रारंभ कर दी और इधर जैसे काल यही इंतजार कर रहा था कि कब सेठानी अपना मनोरथ अपने परिजनों को कहे और उसके बाद कब मैं उन्हें अपना ग्रास बनाऊँ! शायद काल ने भी यह संकल्प लिया था कि सृष्टि को मिलने वाले किसी तोहफे में मैं बाधक नहीं बनूंगा। यह मेरा दुर्भाग्य है कि धरती के बेनमून हीरों को राख में बदलने की जिम्मेदारी मेरी है, पर मैं यथासंभव यह तो प्रयत्न करूं कि सृष्टि उनका ज्यादा से ज्यादा लाभ प्राप्त करे!

बाबु धनपतसिंहजी पालीताणा जाने की तैयारी कर रहे थे, मां पुत्र के आश्वासन के बाद से ही शत्रुंजय तीर्थ पर परमात्मा को बिराजमान करने में ही खो गयी थी, पूरे परिवार में सेठानी महेताब कुमारी की भावना ही चर्चित हो रही थी कि अचानक सेठानी महेताब कुमारी का कुछ पलों की अस्वस्थता में उसी शाम नवकार महामंत्र के स्मरण के साथ स्वर्गवास हो गया।

सेठानी महेताब कुमारी की अकल्पित मृत्यु ने बाबु धनपतसिंहजी को जैसे जीवन की क्षण भंगुरता का बोध तो करवाया ही पर हर पल की जागरूकता का संदेश भी दे दिया। बाबु धनपतसिंहजी अपनी जन्मदातृ मां की मृत्यु की व्यथा को दिल में ही समेटकर मंदिर निर्माण की व्यवस्था

देखने के लिये पालीताणा रवाना हो गये।

यह घटना है वि. सं. 1939 की! उस समय पालीताणा में ठाकुर का राज था। जमीन प्राप्ति के लिये ठाकुर की अनुमति और प्रसन्नता आवश्यक थी। बाबु धनपतसिंहजी के पास अपार संपत्ति थी पर जमीन प्राप्ति के लिये तो ठाकुर जी की कृपा की जरूरत थी।

उन्होंने धनबल के साथ बुद्धिबल का प्रयोग किया। धीरे धीरे ठाकुर सा. की मैत्री संपादित की। एक दिन आनंद और प्रसन्नता के माहौल में ठाकुर ने बाबु धनपतसिंहजी से कहा- तुम्हारे पिताजी सेठ श्री रायबहादुर प्रतापसिंहजी एवं तुम्हारे मातुश्री पालीताणा यात्रार्थ पधारे थे। उस समय मैंने उन्हें देखा था- अहो! क्या भव्य व्यक्तित्व था उनका। उनका अद्‌भुत और तेजस्वी व्यक्तित्व आज भी स्मृति मात्र से मुझे रोमांचित करता है। तुम्हारे व्यक्तित्व में भी मुझे उनका प्रतिबिम्ब नजर आता है। समृद्धि से छलकते सागर में तुम्हारी मर्यादा ही तुम्हारे पारिवारिक संस्कारों की कहानी बताती है। तुम्हारी मैत्री पाकर मैं गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। तुम्हें जो भी इच्छा हो अवश्य कहना। तुम्हारी इच्छापूर्ति करके मुझे प्रसन्नता होगी!

अत्यंत नम्रता से बाबु धनपतसिंहजी बोले- हम तो आपकी मैत्री का प्रसाद पाकर ही प्रसन्न है। मुझे परमात्मा का मंदिर बनाने के लिये कुछ जमीन चाहिये।

सुनकर प्रसन्नता से भर गये ठाकुर! उन्होंने कहा- देरी किस बात की? मैं स्वयं साथ चलता हूँ, जहाँ भी तुम्हें उपयुक्त लगे पसंद कर लो।

बाबु धनपतसिंहजी इतनी आसानी से मनोरथपूर्ति होते देखकर अदृश्य सत्ता के प्रति कृतज्ञ हो उठे! उनका रोम-रोम ठाकुर के प्रति अहोभाव से भर उठा।

ठाकुर के साथ चलते-चलते बाबु धनपतसिंहजी तीर्थ की तलेटी पर पहुंचे। तलेटी से उन्होंने दादा के शिखर को श्रद्धा भरी निगाहों से देखा। उनकी नजर तलेटी से शिखर की ओर चढते बायें किनारे की ओर ज्यौंहि गयी, वहीं अटक गयी। उन्होंने तुरन्त ही तलेटी पर पूजा कर रहे यात्री से पूजा व आरती की थाली लेकर पूजा आरती करके उस जमीन पर पसंदगी का संकेत दे दिया!

ठाकुर संकेत समझ गये। उन्होंने बाबु धनपतसिंहजी को अत्यंत उल्लास से कहा- तुम्हारा कार्य हो गया। जाओ! इस स्थान पर जल्दी से जल्दी मंदिर निर्माण करके अपना संकल्प पूरा करो!

अब देरी को कहाँ अवकाश था। शीघ्र ही सोमपुरा को बुलाकर जमीन दिखाते हुए नक्शा तैयार करवाया गया। मंदिर का विशाल क्षेत्रफल! आधुनिक यंत्रप्रणाली का अभाव। मात्र जनबल और धनबल पर इनसे भी ज्यादा प्रभावी था श्रद्धाबल। लगातार सैकड़ों की संख्या में लोगों का परिश्रम निरंतर जारी रहा। 10 वर्षों के परिश्रम ने आखिर देवविमान जैसा मनोहर एवं आकर्षक मंदिर धरती पर उतार दिया। बाबु धनपतसिंहजी ने अपने विशाल व्यापार एवं परिवार की चिन्ताओं से मुक्त होकर अपना डेरा पालीताणा ही डाल दिया। ज्यों-ज्यों मंदिर का शिखर बाहर आता जा रहा था त्यों-त्यों सेठजी की प्रसन्नता की उर्मियाँ भी उछलती जा रही थी। उनकी कल्पनाएं नित नये-नये पंख फैला रही थी। वे रात सपने में भी बिराजमान होते भगवान एवं लहराती ध्वजा ही देखते थे।

वि. सं. 1945 माघ शुक्ला दशमी को जब उतुंग शिखर पर स्वर्णकलश के साथ ध्वजा फहरायी गयी, परमात्मा आदिनाथ सहित अन्य जिन बिम्ब गादीनशीन हुए तो जैसे पूरे भारत का जैन समाज उसका साक्षी बना था। सेठजी पूरा परिवार नहीं, बल्कि पूरा मुर्शिदाबाद ही पालीताणा लेकर आ गये थे। जनता ने जब बाबु धनपतसिंहजी की निष्ठा और भक्ति देखी तो आश्चर्य से दांतो तले जीभ दबा ली। कहाँ तो एक आवाज पर नौकरों की फौज खड़ी करने वाले सेठ और कहाँ परमात्मा के चरणों में सामान्य व्यक्ति के रूप में समर्पित भक्ति! आज जिसे बाबु मंदिर अथवा धनवसी टूंक कहकर पहचाना जाता है वही यह गगनचुम्बी जिनालय।

उसके बाद तो बाबू धनपतसिंहजी ने पूर्व भारत में परमात्मा की कल्याणक भूमियों पर कुल 16 जिनालय एवं 20 धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। विशाल राशि स्वधर्मीभक्ति में खर्च की।

बाबु धनपतसिंहजी एवं मातुश्री महेताब कुमारी अतीत का पृष्ठ हो गये। पर जब तक उनके द्वारा निर्मित ये उत्तुंग जिनालय इस धरती पर रहेंगे तब-तक वे अतीत होकर भी वर्तमान ही रहेंगे।

58

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.

सन् 1953 अर्थात् वि.सं. 2010 का चातुर्मास पूज्य गुरुदेवश्री का उदयपुर में हुआ था। वि. 2009 के बीकानेर चातुर्मास की ऐतिहासिक संपन्नता के पश्चात् जोधपुर, पाली होते हुए राणकपुर पधारे थे। बीकानेर में राणकपुर प्रतिष्ठा महोत्सव समिति ने पूज्यश्री को प्रतिष्ठा पर पधारने की विनंती की थी। राणकपुर तीर्थ का जीर्णोद्धार हुआ था। समिति की भावना थी कि समस्त गच्छों के आचार्य भगवंतों की पावन निश्रा प्राप्त हो।

राणकपुर के साथ खरतरगच्छ का भी विशिष्ट संबंध रहा है। मुख्य द्वार के सामने जो मंदिर है, जिसे सिलावटों का मंदिर यह नाम वर्तमान में दिया गया है। हकीकत में वह खरतरवसही है। राणकपुर तीर्थ निर्माण के समय ही खरतरगच्छ के श्रावकों ने इस मंदिर का निर्माण किया था। इस बात का उल्लेख सतरहवीं शताब्दी के महोपाध्याय समयसुन्दर ने राणकपुर की गीतिका में किया है–

खरतरवसही खंत सुं रे लाल, निरखंता सुख थाय, मन मोह्युं रे।

पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल, जोतां पातक जाय मन मोह्यो रे।।6।।

संवत् सोल बिहुतरह रे लाल, मगसिर मास मझारि मन मोह्यो रे।

राणपुरइ जात्रा करी रे लाल, समयसुन्दर सुखकार मन मोह्यो रे।।7।।

राणकपुर तीर्थ की व्यवस्था पूर्व में सादडी श्री संघ के पास थी। वि. सं. 1953 में श्री संघ ने इस तीर्थ की व्यवस्था शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी को सौंप दी। तब से आज तक इस तीर्थ का संचालन पेढी करती आ रही है।

जर्जर हो चुके इस तीर्थ का पूर्ण जीर्णोद्धार पूज्य आचार्य श्री नेमिसूरीश्वरजी म. की प्रेरणा से आणंदजी कल्याणजी पेढी के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ। वि. 1991 से प्रारंभ जीर्णोद्धार वि. 2001 तक चला। जीर्णोद्धार की

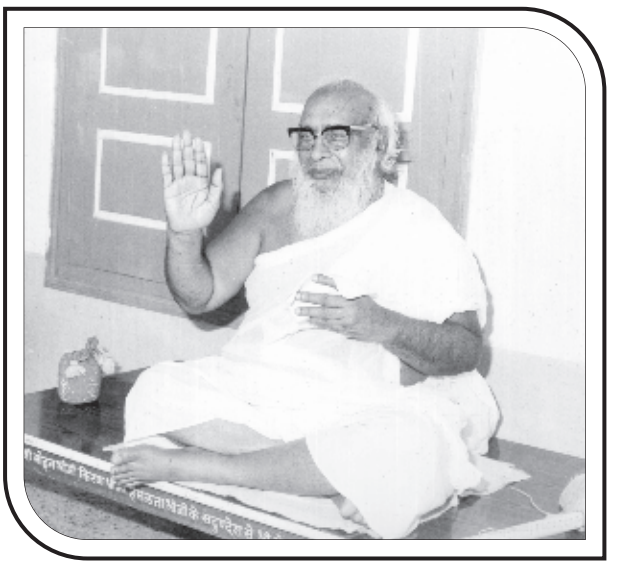

यह विशिष्टता रही कि सारे पाषाण-खण्ड पुराने ही काम में लिये गये। जहाँ अत्यधिक आवश्यकता हुई, वहीं पर अन्य वैसे ही पाषाण का उपयोग किया गया।

इस तीर्थ की पुनः प्रतिष्ठा वि. 2009 में तपागच्छीय नेमिसूरि समुदाय के पूज्य आचार्य श्री उदयसूरीश्वरजी म. नंदनसूरीश्वरजी म. की पावनन निश्रा में सादडी श्री संघ द्वारा संपन्न हुई। हजारों की संख्या में सभी गच्छों के साधु भगवंतों व साध्वीजी म. की निश्रा मिली। पूज्य गुरुदेवश्री भी इस प्रतिष्ठा के साक्षी बने थे। पूज्यश्री अपने संस्मरण सुनाते समय इस प्रतिष्ठा का वर्णन करते थे। सारी व्यवस्थाऐं टेंटों में की गई थी। हजारों की भीड थी।

सादडी प्रवास में वहाँ ओसवाल न्याति नोहरे में राणकपुर प्रतिष्ठा के कुछ फोटो लगे मैंने देखे थे। उसमें वरघोडे के चित्रों में अन्य आचार्य भगवंतों के साथ पूज्यश्री का चित्र देख कर मन अत्यन्त प्रमुदित हुआ था। राणकपुर की प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् उदयपुर होते हुए पूज्यश्री केशरियाजी पधारे। परमात्मा केसरियानाथ के दर्शन किये। पुनः उदयपुर पधारे। लगभग 10 दिनों का प्रवास रहा। प्रवचनामृत-वर्षण से उदयपुर का सकल समाज तृप्त होने लगा। प्रतिदिन 15 हजार से अधिक लोगों की उपस्थिति रहती

थी।

उस समय के उदयपुर डी.आई.जी. कमिश्नर श्री चौपडाजी एवं उस समय के राजस्थान के राजस्व मंत्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया ने प्रतिदिन प्रवचन सुने। श्री सुखाडियाजी का प्रीतिभाव तब से लगातार रहा।

श्री संघ ने चातुर्मास की विनंती की। पूज्यश्री ने देश काल भाव देख कर चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की। चातुर्मास से पूर्व आमेट श्री संघ आपकी सेवा में उपस्थित हुआ। आमेट में श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर का निर्माण हुआ था। प्रतिष्ठा करानी थी। पूज्यश्री ने उनकी विनंती स्वीकार कर प्रतिष्ठा संपन्न करवाई।

यह प्रतिष्ठा साम्प्रदायिक सद्भाव का अनूठा उदाहरण थी। दस दिवसीय महोत्सव में सभी संप्रदाय वालों ने अत्यन्त उत्साह से भर कर भाग लिया था। वि. 2010 ज्येष्ठ शुक्ल 6 ता. 17 जून 1953 को यह प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी। जो अपने आप में एक इतिहास बनी थी।

श्री केशरियाजी में बीसड उपधान एवं शिविर संपन्न

उदयपुर के समीप झीलों एवं पहाड़ियों के मध्य स्थित श्री केशरिया जी गजमंदिर के प्रागंण में बीसड़ (अढारिया) 20 दिन का मिनी उपधान तप एवं अष्ट दिवसीय आवासीय कन्या संस्कार शिविर का आयोजन 6/5/2018 से 25/5/2018 तक सानंद सम्पन्न हुआ।

प.पू. गुरुदेव आचार्य भगवंत खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वर जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती प.पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभ सागर जी म.सा., प.पू. श्री मनीषप्रभ सागर जी म.सा., प.पू श्री मयंकप्रभ सागर जी म.सा., प.पू. श्री मेहुलप्रभ सागर जी म.सा. एवं प.पू. गणिनी पद विभूषिता पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गुरुवर्या श्री सुलोचना श्री जी म.सा. व प.पू. सुलक्षणा श्री जी म.सा. की सुशिष्या प.पू. डॉ. प्रिय श्रद्धांजना श्री जी म.सा. एवं प्रिय स्वर्णांजना श्री जी म.सा. आदि की प्रेरणा एवं निश्रा में यह आराधना उत्सव संपन्न हुआ। आचार्य पदवी के बाद गुरुदेव श्री का प्रथम बार गजमंदिर केसरियाजी में आगमन हुआ। प.पू. गुरुदेव श्री आचार्य भगवंत ने अपने मुखारविंद से सबको सम्बोधित करते हुए कहा– ज्येष्ठ महीने की भीषण गर्मी में बीसड तप करना बहुत मुश्किल है। उपधान में नन्हें-मुन्ने बच्चों ने भाग लेकर बहुत-बहुत अनुमोदनीय एवं प्रशंसनीय साहस किया है। साथ ही कन्या संस्कार शिविर में कन्याओं ने बहुत ही उत्साह-उमंग को हर एक क्लास को बारीकी से समझा है। मैं तो यह कहना चाहूंगा- ऐसे शिविर साल में दो बार होने चाहिए क्योंकि कन्याओं में संस्कारों की अत्यंत आवश्यकता है। परिवार का पूरा भविष्य इन्हीं पर निर्भर है। उपधान तप के तपस्वीगण का वरघोड़ा बहुत ही शानदार रहा। उपधान तप का मुख्य लाभ संघवी श्री अशोककुमारजी मानमलजी भंसाली परिवार सिवाणा-अहमदाबाद वालों ने लिया एवं शिविर के मुख्य लाभार्थी बने श्रीमान् सा मोतीलालजी झाबक रायपुर (छ.ग) वाले। सम्मान समारोह का संचालन प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल मुम्बई ने किया। गुरुदेव का गुरुपूजन एवं कम्बली बोहराने का लाभ श्री अशोक जी तातेड़ रायपुर (छ.ग.) वालों ने लिया। विविध प्रांतों से अतिथिगण पधारे जिसमें श्री जिन कुशल सूरि दादावाड़ी सिन्धनूर के ट्रस्टीगण गजमंदिर के अध्यक्ष महोदय बाबूलालजी बोहरा, प्रकाशजी कानूगो आदि। श्रीमान् वंशराज जी भंसाली, अशोक जी भंसाली, गजेन्द्र जी भंसाली, प्रकाश जी कानूगो ने अपने हृदय के भाव प्रस्तुत किए। शिविर समापन में कन्याओं द्वारा अपने वक्तव्य से शिविर के महत्व, जीवन परिवर्तन एवं नृत्य नाटक आदि की प्रस्तुतियां दी गई। शिविर में प्रथम स्थान चौहटन निवासी कोमल धारीवाल ने प्राप्त किया। उपधान एवं शिविर का आयोजन श्री कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट, श्री कांति मणि सुलोचना आराधना तप समिति और अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति के द्वारा किया गया।

गुरु क्यों जरूरी है ?

गुरु हेमचरण रज साध्वी शुद्धांजनाश्री

सूरज की एक किरण अंधकार मिटा देती है
बसंत की बहार मुरझाया फूल खिला देती है,
गुरु कृपा में बहुत शक्ति होती है,
गुरु की नजर सौर्य भाग्य को जगा देती है

न सूर है न ताल है न शब्द है न ज्ञान है, क्या लिखूं आपके लिए गुरुवर्या कलम खुद ही हैरान है...। मेरी कलम बार-बार मुझसे पूछ रही है कि आखिर कहाँ से लिखना चालू करूँ और कहाँ तक लिखूं क्योंकि चंद पंक्तियों में गुरु के बारे में लिखना इसका सीधा सा मतलब है कि सूर्य को छोटी सी डब्बी में बंद करने का प्रयास करना।

सृष्टि की फुलवारी में अनेक प्राणी जन्म लेते हैं लेकिन जीवन उन्हीं का सार्थक होता है जिनका व्यक्तित्व दूसरो को सदैव सही राह दिखाता है जिनके पास सत्य, अहिंसा, दया, परोपकार, प्रेम और सदाचार जैसे संस्कारों का खजाना होता है, वे अपने जीवन को उज्ज्वल बनाने के साथ ही साथ दूसरों के जीवन को भी उज्ज्वल बनाते है। ऐसे ही अनमोल रत्नों में से एक रत्न थी- खरतरगच्छीय प.पू. महान आत्मसाधिका श्री अनुभव श्री जी म.सा. की सुशिष्या सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री प.पू. गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा. जिनकी आकृति में सौम्यता, प्रकृति में सरलता और कृति में सहायकता थी।

गुरु नाम है उस श्रद्धा का जो व्यक्ति के भीतर प्रसुप्त ज्ञान को जगाता है, गुरु गुरुता का गौरी शिखर है जिसकी ऊँचाई को देख शिष्य भी उस ऊँचाई की और अग्रसर होने को प्रेरित होता है, गुरु मोमबत्ती की तरह स्वयं जलकर शिष्य की राहें रोशन करता है, गुरु अगरबत्ती की तरह शिष्य के जीवन मंदिर को सुवासित करता है। गुरु अपने ज्ञान के गुरुत्वाकर्षण से शिष्य को अपने आभा मण्डल में खीचता है उसे अपने परमविस्तार में वैसे ही समाहित कर लेता है, जैसे सागर बूंद को।

गुरु सूर्य है, गुरु चन्द्र है गुरु ही पूर्ण प्रकाश है।
गुरु के चरणों में मिलता है एक नया विश्वास है।

गुरु ब्रह्मा है, वह शिष्य के अन्तर जगत का सृष्टा है, गुरु विष्णु है, उसकी चेतना के सहस्रदल कमल को विकसित करता है। गुरु महेश्वर है वह शिष्य के आज्ञात लोक का संहार कर उसके अन्तर लोक में ज्ञान का भुवन भास्कर उगाता है। इन समस्त रूपों में प.पू. गुरुवर्या श्री ब्रह्म स्वरूप थी।

गुरुवर्या श्री बचपन से ही विचक्षण प्रतिभा की धनी थी। विद्वत्ता होने के बावजूद सरलता, नम्रता, विनय आदि विशिष्ट गुणों से अलंकृत थी। बाल्यावस्था में ही संसार का त्यागकर सर्वविरति मार्ग को स्वीकार कर जिनशासन की महिमा एवं प्रगति में अतुल योगदान प्रदान किया था। गुरुवर्या श्री के जीवन में ज्ञान की गंगोत्री, दर्शन का दरिया, चारित्र की चदरिया एवं तप का जाप सदा शोभायमान रहता था।

एक भक्त ने संत महात्मा से प्रश्न किया कि जीवन में गुरु क्यों जरूरी है?संत ने कहा- उत्तर देने से पहले मैं आपसे एक सवाल पूछता हूँ कि दुनिया में माँ क्यों जरूरी हैं?वह व्यक्ति बोला- संसार में आना है तो माँ जरूरी है, तभी संत ने भक्त से कहा- ठीक इसी प्रकार संसार से जाना हो तो गुरु जरूरी है। माता-पिता अबोध बालक को प्रथम बोध देते है और उसी बोध से बुद्ध बनाने के लिए अग्रसर करना गुरु का कार्य है।

संसार में सबसे जरूरी गुरु है। गुरु बने बिना मोक्ष में

जाया जा सकता है परन्तु गुरु बनाये बिना मोक्ष नहीं मिलता।

प.पू. गुरुवर्या श्री की वाणी में वह ओजस्विता थी कि भक्त जन आकर्षित हो जाते थे, प्रवचन में ऐसा प्रभाव था कि लोगों का जीवन परिवर्तित हो जाता था, और व्यवहार में इतनी सरलता थी कि लोग सहज ही उनके बन जाते थे। इसलिये सभी कहते थे- 'गुरुवर्या! आपने अपना बनाया है हमें

प्यार का अमृत पिलाया है हमें
जिन्दगी मेरी कुर्बान आप पर
आपने ही जीना सिखाया है हमें

प.पू. विनय सम्पन्ना विनीतप्रज्ञा श्री जी म.सा. जिनका संपूर्ण जीवन गुरु चरणों में समर्पित था। उच्चकोटि का अध्ययन और डॉक्टरेट की उपाधि से अलंकृत होने के बावजुद उपकारी गुरु के प्रति समर्पण की भावना और श्रद्धा गजब की थी। इतिहास में एकलव्य का उदाहरण गुरु समर्पण के लिए याद किया जाता है। पर प.पू. विनीतप्रज्ञा श्री जी म.सा. तो गुरु के साथ प्रयाण करने में क्षण मात्र का भी समय नहीं लगाया। गुरु समर्पण का ऐसा अनूठा उदाहरण इतिहास के पन्नों पर विरला ही मिलता है।

ऐसी विद्वद्वर्या गुरुवर्या जेठ सुदि सप्तमी को हमें मझधार में अकेला छोड़ कर इस धरती से सदा के लिए प्रयाण कर गई। उनकी कमी को कोई पूर्ण नही कर सकता। उपकारी गुरुवर्या के 11 वां भावांजली दिवस पर उनके गुणों का गुणगान कर उनके जैसे गुणों को प्राप्त करने का यत्न, प्रयत्न, और पुरुषार्थ कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

मोक्ष धाम की ओर सिधारी
देकर स्नेह, दया अनुराग
अजर-अमर है इस दुनिया में
सदा गुरुवर्या का नाम...।

श्रद्धांजली स्तवन **तर्जः- शु करूं दादा तारी याद आवे**

गुरु हेम चरण रज
साध्वी प्रमुदिताश्रीजी

क्या करूं गुरुवर तेरी याद आती है
याद आती है कि आंखे नीर बहाती है
तुम्हें बुलाती है ये अंखियाँ छलक जाती है
क्या करूं गुरुवर तेरी.....

संसार को ठुकराकर आये थे तेरी शरण में
परिवार को रूठाकर आये थे तेरी शरण में
जीवन की हर उलझन को तुम ही सुलझाती थी।

ढूंढा भटका कितना, तब ऐसे गुरुवर मिले
घोर अंधेरों में भी आशाओं के नव दीप जले
जन्म-जन्म की व्याधि को तुम ही बिसराती थी।

रोम-रोम मेरा, गुणगान करे गुरुवर का
हर पल-पल हर क्षण जीवन में, ध्यान रहे गुरुवर का
वो मोक्ष मंजिल पर हमको पहुंचाना चाहती थी

संयम सौरभ से सुरभित किया जीवन को
प्रज्ञा और विनय से सुगंधित किया जीवन को
'प्रमुदित' मन से हम सब गुणगान गाते है।

शब्दों की मुक्तावली में गुरुवर्या श्री...

गुरु हेमचरणरज साध्वी मननप्रियाश्री

प.पू. सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा., विनितप्रज्ञा श्री जी म.सा. आपकी तप, त्याग, स्वाध्याय और साधना की ज्योति ने हमारे मन के अंधकार को प्रकाश की किरण दिखलाई है जैसे आसमां से उतरकर कोई रोशनी जमीं पर आई है।

विकारों के गर्त्त में डुबे हुए मानव को आपने महावीर का मार्ग बतलाया है
और आत्मा से परमात्मा, नर से नारायण तथा मानव से महामानव बनने का चमत्कार दिखलाया है।
कहां-कहां से लोग आपके दर्शन करने आते थे
जो आते है शरण आपकी वो सब कुछ पा जाते थे
तेरे दरवाजे पर आकर जो दस्तक दे जाता था
खुशियों से झोली भरकर आशीष आपकी पाता था
शंखेश्वर और पाली में नया इतिहास रचा कर आयी थी
जहां-जहां से गुजर गयी नया निर्माण कराती आयी थी
कई नयी पाठशालाओं का गठन कराती आयी थी
जन-जन, सज्जन, महाजनो के जीवन में संस्कारों की ज्योत जगाती आयी थी।
जहां बसेरा हो था आपका वो जमी तीर्थ बन जाती थी
जिस मांटी को हाथ लगा दिया वो सोना बन जाती थी
आप छलके अमृत का प्याला हमें पिलाने आयी थी
चंदन मन की शीतलता से तपन मिटाने आयी थी
साहित्य जगत में आपने तो कमाल कर दिया था
प्रवचन सारोद्धार के विवेचन से नाम कर दिया था।
प्रवचन शैली मन को मंत्रमुग्ध कर देती थी
हर व्यक्ति के ताप-संताप को हर देती थी
ज्येष्ठ सुदी सप्तमी का दिन क्रूर कालयोग था
हृदय की धड़कनों को दहला देने वाला वह योग था
काल की चपेंट में द्वय गुरुवर्या का प्रवेश था
हमारी उपकारी गुरुवर्या श्री का इस जहां से वियोग था
उन घड़ियों का एहसास मुझे हो रहा है
उन पलों को याद कर दिल रो रहा है
क्यों गये हमसे दूर क्यों छोड़ गये अधीर
सभी जन आज बिलख-बिलख कर रो रहा है।
आप तो चले गये हमें यूं छोड़कर पर
हम तो इतना चाहते है
आशीर्वाद लेने के लिए राग से विराग की ओर बढते चले जाते है।
आपके दर्शन की झलक पाने के लिए सदा ठहर जाते है।

समय प्रबंधन जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग

सिंकदर अपना सम्पूर्ण राज्य दे कर अपने जीवन को दो दिन बढ़ाना चाहता था और इसके लिये उसने अपने हकीमों से गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की थी परन्तु अपनी सारी कोशिशों के बावजूद वे उस महान सम्राट को बचा नहीं पाए, महान अभिनेत्री नूतन कैंसर से पीड़ित थी और उसका बेटा उसे देखने आ रहा था। नूतन की अंतिम इच्छा अपने बेटे से मिलने की थी पर बेटे के पहुंचने से केवल 20 सेकेण्ड पहले उसकी मृत्यु हो गयी, इन घटनाओं से हमें समय का महत्व समझ में आता है। मैनेजमेंट डेवलपमेंट अकादमी के चेयरमैन प्रोफेसर रमेश अरोड़ा जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ द्वारा मोती डूंगरी रोड स्थित दादावाड़ी में युवाओं के लिए आयोजित कार्यक्रम में Smart Time Management विषय पर बोल रहे थे।

प्रोफेसर अरोड़ा ने कहा कि भगवान महावीर राजकुमार और वैभवशाली थे परन्तु जब वे वैभव को त्याग कर साधु बने तब जीवन में अध्यात्म को प्रमुखता दी और एक एक क्षण का उपयोग कर अपना सम्पूर्ण समय उद्देश्य की सिद्धि में लगा दिया।

उन्होंने कहा- जीवन समय से ही बना है। जीवन के सात मुख्य आयामों शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं व्यापारिक, भावनात्मक, एवं आध्यात्मिक के बीच संतुलन एवं उनमें समय का सही प्रबंधन करने से जीवन को सार्थक और सफल बनाया जा सकता है। उन्होंने समय प्रबंधन को सभी प्रबंधन तकनीकों में सबसे महत्वपूर्ण और सफलता का सूत्र बताया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में खरतरगच्छ संघ के मंत्री ज्योतिकुमार कोठारी ने प्रोफेसर अरोड़ा को प्रबंधन गुरु एवं प्रभावी वक्ता के रूप में अभिहित किया। प्रकाशचन्द लोढ़ा, सुनील महमवाल, देवेन्द्र मालू एवं हेमंत टांक ने माला एवं साफा पहनाकर स्वागत किया। कार्यक्रम के अंत में प्रश्नोत्तरी में नितिन बागरेचा, अभिषेक राक्यान आदि युवाओं ने सम्बन्धित विषय पर प्रश्न पूछे जिनके प्रोफेसर अरोड़ा ने उत्तर दिये। विमल पुनमिया एवं शांति सिंघी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

अंत में कार्यक्रम संयोजक ज्योति कोठारी ने इस कार्यक्रम से जुड़ने वाले सभी संगठनों खरतरगच्छ संघ, श्रीमाल सभा, खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं जिनदत्तकुशलसूरि मण्डल को धन्यवाद अर्पित किया।

प्रकृति के नियम

संकलन- मुकेश पी. प्रजापत

प्रकृति का पहला नियम

यदि खेत मे बीज न डाले जाएं तो कुदरत उसे घास-फूस से भर देती है। ठीक उसी तरह से दिमाग मे सकारात्मक विचार न भरे जाएँ तो नकारात्मक विचार अपनी जगह बना लेते हैं ।

प्रकृति का दूसरा नियम

जिसके पास जो होता हैं वह वही बांटता है ।

सुखी ''सुख'' बांटता है

दु:खी ''दु:ख'' बांटता हैं

ज्ञानी ''ज्ञान'' बांटता है

भ्रमित ''भ्रम'' बांटता हैं

भयभीत ''भय'' बांटता है

प्रकृति का तीसरा नियम

आपको जीवन मे से जो कुछ भी मिले उसे पचाना सीखो क्योकि

भोजन न पचने पर रोग बढते हैं ।
पैसा न पचने पर दिखवा बढता हैं।
बात न पचने पर चुगली बढती है ।
प्रशंसा न पचने पर अहंकार बढता है ।
निंदा न पचने पर दुश्मनी बढती है ।
राज न पचने पर खतरा बढता है ।
दु:ख न पचने पर निराशा बढती है ।
और सुख न पचने पर पाप बढता है ।

समाचार दर्शन

पूज्यश्री का उदयपुर प्रवास

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 2 जयपुर से विहार कर किशनगढ में दादावाडी का शिलान्यास संपन्न करवाकर बिजयनगर, भीलवाडा होते हुए चित्तौड पधारे। चित्तौड नगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा, निम्बाहेडा व मंगलवाड चौराहा में प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर विहार करते हुए ता. 16 मई 2018 को उदयपुर पधारे।

पूज्यश्री के साथ पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. आदि का पदार्पण हुआ।

उदयपुर में आपश्री का तीन दिवसीय प्रवास रहा। प्रथम दिन श्री जैन श्वेताम्बर महासभा द्वारा आयड तीर्थ पर प्रवेश करवाया गया। पूज्यश्री का प्रवचन आयोजित हुआ। स्वामिवात्सल्य का आयोजन हुआ। पूज्यश्री ने अपने प्रवचन में फरमाया– आयड तीर्थ तपागच्छ की उद्‌गम स्थली है। यहीं पर चित्रवाल गच्छीय आचार्य जगच्चंद्रसूरि को वि. 1285 में तपा बिरूद प्रदान किया था। महासभा के अध्यक्ष श्री तेजसिंहजी बोल्या, सचिव श्री कुलदीपजी नाहर आदि द्वारा पूज्यश्री का अभिनंदन किया गया। कामली वहोराई गई।

दूसरे दिन पूज्यश्री का पदार्पण सूरजपोल दादावाडी में हुआ। श्री जैन श्वेताम्बर वासुपूज्य स्वामी जिन मंदिर दादावाडी ट्रस्ट की ओर से पूज्यश्री का मंगल प्रवेश करवाया गया। स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। पूज्यश्री ने प्रवचन में इस दादावाडी के इतिहास का वर्णन करते हुए श्री चन्द्रसिंहजी लोढा व श्री सुन्दरलालजी दलाल का स्मरण किया। जिन्होंने इस दादावाडी की सुरक्षा व इसके विकास में अनूठा योगदान अर्पण किया था। यह ज्ञातव्य है कि इस दादावाडी मंदिर की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव श्री की पावन निश्रा में ही संपन्न हुई थी।

यह दादावाडी पूज्यश्री के मार्गदर्शन में ही विकास कर रही है। ट्रस्ट के अध्यक्ष मोहनसिंहजी दलाल, सचिव श्री राजभाई लोढा आदि समस्त ट्रस्ट मंडल ने पूज्यश्री का बहुमान किया। कामली ओढाई। ट्रस्ट मंडल की ओर से आगामी चातुर्मास हेतु विनंती की गई।

तीसरे दिन पूज्यश्री ने चेटक सर्कल दादावाडी व चौगान स्थित श्री पद्‌मनाभ स्वामी जिन मंदिर के दर्शन कर श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, उदयपुर की विनंती पर मालदास शेरी स्थित उपाश्रय में पधारे। हाथी पोल से पूज्यश्री का प्रवेश करवाया गया। पद्‌मनाभ स्वामी के मंदिर की प्रतिष्ठा खरतरगच्छ पिप्पलक शाखा के श्री हीरसागरजी गणि द्वारा वि. 1819 में संपन्न हुई थी। इस मंदिर का निर्माण डोसी परिवार व नवलखा परिवार द्वारा करवाया गया था।

पूज्यश्री ने प्रवचन में उदयपुर में पूर्व में संपन्न हुए गुरु महाराज आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म. सा. के तीन चातुर्मासों का स्मरण किया। यहाँ के एकता भावों की चर्चा कर अनुमोदना की। श्री संघ के अध्यक्ष श्री डॉ. शैलेन्द्रजी हिरण, सचिव श्री कुलदीपजी नाहर आदि समस्त श्री संघ ने पूज्यश्री का अभिनंदन करते हुए कामली ओढा कर आगामी चातुर्मास की पुरजोर विनंती की।

इस प्रकार पूज्यश्री के तीन दिनों का यह उदयपुर प्रवास एक अमिट छाप छोड गया। चौथे दिन पूज्यश्री का केशरियाजी की ओर तथा पू. माताजी म. बहिन म. का विहार बाडमेर की ओर हुआ।

चितौड नगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न

आचार्य श्री हरिभद्रसूरि की जन्म स्थली, आचार्य जिनवल्लभसूरि की कर्मस्थली, आचार्य दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की आचार्य पद स्थली राजस्थान की ऐतिहासिक स्थली चितौड नगर में श्री नाकोडा पार्श्वनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में प्रथम ज्येष्ठ वदि 6 रविवार ता. 6 मई 2018 को अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु उग्र विहार कर पूज्यश्री ने ता. 3 मई को चित्तौड नगर में प्रवेश किया। प्रवेश के पश्चात् प्रवचन फरमाते हुए पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने चित्तौड नगर के इतिहास का उल्लेख करते हुए यहाँ के निवासियों को गौरवशाली बताया।

ता. 5 को ऐतिहासिक वरघोडे का आयोजन हुआ। स्थानीय सांसद श्री सी.पी. जोशी, स्थानीय विधायक श्री आक्याजी आदि सम्मिलित हुए। बाहर से बडी संख्या में श्रावक संघों का पदार्पण हुआ।

ता. 6 को नाकोडा पार्श्वनाथ, मुनिसुव्रतस्वामी, केशरियानाथ, गौतमस्वामी, दादा जिनदत्तसूरि, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि, अकबर प्रतिबोधक जिनचन्द्रसूरि, गणनायक सुखसागर, आचार्य जिनकान्तिसागरसूरि, अंबिका देवी, पद्मावती देवी, सरस्वती देवी आदि प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

ध्वजा, मूलनायक परमात्मा की रत्नमयी प्रतिमा भराने व बिराजमान, केशरियानाथ प्रभु को बिराजमान आदि लाभ मूल नांदसी निवासी श्री जीवराजजी सौ. सुमित्रादेवी खटोड परिवार ने लिया। मुनिसुव्रतस्वामी को बिराजमान का लाभ श्री शांतिलालजी कांतिलालजी राठोड सादडी वालों ने लिया।

कलश का लाभ श्री कन्हैयालालजी महात्मा परिवार ने लिया। दादावाडी में मूलनायक मणिधारी जिनचन्द्रसूरि को बिराजमान का लाभ संघवी श्री दलीचंदजी मिश्रीमलजी मावाजी मरडिया परिवार चितलवाना वालों ने लिया।

प्रतिष्ठा के समय का हर्षोल्लास अद्भुत था। विधिविधान अरविन्दजी चौरडिया इन्दौर वालों ने करवाया।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव में श्री हरिभद्रसूरि स्मृति ट्रस्ट के समस्त ट्रस्ट मंडल का, विशेष रूप से श्री जीवराजजी खटोड का पुरूषार्थ अत्यन्त अनुमोदनीय रहा।

बोथरा बने अध्यक्ष, छाजेड बने सचिव
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक कल्याणपुरा पार्श्वनाथ मन्दिर ट्रस्ट का हुआ गठन

बाड़मेर। श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक कल्याणपुरा पार्श्वनाथ मंदिर ट्रस्ट में नए ट्रस्ट मंडल के गठन को लेकर बैठक आयोजित की गई। जिसमें नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। सर्वसम्मति से सम्पतराज बोथरा दिल्ली को अध्यक्ष, चम्पालाल छाजेड़ को सचिव, बाबुलाल वडेरा को उपाध्यक्ष, बाबुलाल बोहरा को कोषाध्यक्ष, विक्रम मेहता को सह सचिव एवं राधा किशन बोथरा, शंकरलाल छाजेड़, विजय कुमार धारीवाल, कैलाश धारीवाल, जगदीश मालू, विक्रम मालू, बाबुलाल सिंघवी, सुनील सिंघवी, राणमल संखलेचा, कैलाश संखलेचा, पवन वडेरा, राकेश बोहरा, बाबुलाल घीया, हस्तीमल गोलेच्छा, मनसुखदास पारख, सम्पतराज सेठिया को श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक कल्याणपुरा पारसनाथ मंदिर ट्रस्ट में सदस्य मनोनीत किये गए। अंत में अध्यक्ष द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। –विक्रम मेहता, सहसचिव

||श्री स्थंभन पार्श्वनाथाय नमः||

||श्री शांतिनाथाय नमः||

|| श्री जिनदत्त–मणिधारी–कुशल–चन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः||

धर्म नगरी मुंबई महानगर के हृदय सी.पी.टैंक / खेतवाड़ी मध्ये

आत्मिक और आध्यात्मिक चातुर्मास मंगल प्रवेश प्रसंगे

आत्मीय भावभरा हार्दिक आमंत्रण

आशीर्वाद प्रादाता

प.पू. आ.श्री
जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

आज्ञा प्रदाता

प.पू. खरतरगच्छाधिपति
आचार्य श्री जिनमणिप्रभ
सूरीश्वरजी म.सा.

निश्रा प्रदाता

परम पूज्या प्रवर्तिनी महोदया प्रेमश्रीजी म.सा. की प्रशिष्या
पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी पद विभूषिता
गुरुवर्या **सुलोचना श्रीजी म.सा.**
प. पू. तपोरत्ना **सुलक्षणाश्रीजी म.सा.**
आदि ठाणा 11 के आध्यात्मिक

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के पावन प्रसंगे आप सभी सपरिवार–इष्ट मित्रो
सहित पधारकर शासन की शोभा में अभिवृद्धि करें।
गुरुवर्या श्री जी के मंगल प्रवेश पर आपके इन्तजार में ...!

मंगल प्रवेश
आषाढ़ सुदी 3
रविवार
दि. 15.07.2018
प्रातः 8.30 बजे

चातुर्मास स्थल
कपोल वाड़ी
दुसरी पांजरापोल
सी.पी टैंक
मुंबई–4

निवेदक

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ–मुंबई

75/77, नियो ओरनेट, दुसरा माला, नानुभाई देसाई रोड, अलंकार सिनेमा के पास, मुंबई–4
(मो. 7021211933) सम्पर्क सूत्र : संघवी चाचूलाल मरडिया : 9322257009

॥ श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः॥ श्री विमलनाथाय नमः ॥ श्री महावीर स्वामिने नमः॥

अनंतलब्धि निधानाय गुरु गौतम स्वामिने नमः
खरतरविरुद धारक आचार्य श्री जिनेश्वर सूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्र सूरि सद्गुरुभ्यो नमः
पूज्य गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

नगीना नगरी नागौर में

भव्य चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे

आज्ञा प्रदाता
प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री मज्जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

दिव्यकृपा

प. पूज्या गुरुवर्या आगम ज्योति
स्व. प्र. श्री प्रमोद श्रीजी म.सा.

आमंत्रण

शुभ मंगल प्रवेश

आषाढ़ सुदि 11, सोमवार,
23 जुलाई 2018

परम पूजनीया गुरुवर्या प्र. श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
प. पू. श्रमणी रत्ना माताजी म. **श्री रतनमाला-श्रीजी म.सा.**
प.पू. डॉ. साध्वी **श्री शासनप्रभा-श्रीजी म.सा.**
प.पू. साध्वी **श्री निष्कांजना-श्रीजी म.सा.** आदि ठाणा

चातुर्मास प्रवेश की मंगल वेला में आप पधार कर संघ को लाभान्वित करें।

विनित

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ

कनक आराधना भवन,
कालीपोल का उपासरा
नागौर (राज.)

केवलचन्द डागा
संरक्षक
प्यारेलाल बोथरा
उपाध्यक्ष
सुनिल कुमार डागा
सह-सचिव

गौतमचन्द कोठारी
अध्यक्ष
94133 69401
केवलचन्द बच्छावत
सचिव
94142 44295
कमलचन्द डोसी
कोषाध्यक्ष

॥ श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः॥ श्री विमलनाथाय नमः ॥ श्री महावीरस्वामिने नमः॥

अनंतलब्धि निधानाय गुरु गौतमस्वामिने नमः
खरतर विरुदधारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः
पूज्य गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

फूलों की नगरी बैंगलोर नगर की धन्यधरा पर

भव्य चातुर्मास

प्रवेश प्रसंगे आत्मीय आमंत्रण

आज्ञा प्रदाता

प.पू. मरूधरमणि, युवा प्रेरक
खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा.

प्रत्यक्ष कृपा

पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी पद विभूषिता
गुरूवर्या सुलोचना श्रीजी म.सा.

प. पू. तपोरत्ना
सुलक्षणाश्रीजी म.सा.

शुभ प्रवेश

आषाढ़ सुदि 9, शनिवार 21 जुलाई 2018

पावन निश्रा

खरतरगच्छाधिपति आ. श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी
गच्छ गणिनी प.पू. सुलोचनाश्रीजी म.सा. की विदूषी शिष्या, मधुरभाषी
प.पू. प्रियरंजनाश्रीजी म.सा., प्रियदिव्यांजनाश्रीजी म.सा., प्रियशुभांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

निवेदक

श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट

89–90, गोविन्दप्पा रोड़, बसवनगुड़ी, बैंगलोर, फोन (080) 22423548

॥ श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः॥ श्री कुंथुनाथाय नमः ॥ श्री महावीरस्वामिने नमः॥
श्री आदिनाथाय नमः
अनंतलब्धि निधानाय गुरु गौतमस्वामिने नमः
खरतरविरुद धारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः
पूज्य गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

सुघोषा घंट से सुप्रसिद्ध शहादा नगर की धन्यधरा पर

चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे

दिव्याशीष

प.पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चंपा श्रीजी म.सा.
प. पू. समता साधिका श्री जितेन्द्र श्रीजी म.सा.

आज्ञा प्रदाता

प.पू. मरूधरमणि, युवा प्रेरक
खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा.

आत्मीय आमंत्रण

प.पू. गच्छगणिनी मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म.सा.

प.पू. स्नेह सुरभि
श्री पूर्णप्रभा श्रीजी म.सा.

पावन निश्रा

प.पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चंपाश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्या
प.पू. गच्छगणिनी मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म.सा.
प.पू. स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभा श्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता
प.पू. **हर्षपूर्णा श्रीजी** म.सा., प.पू. **मनोरमा श्रीजी** म.सा.
प.पू. **अभिनंदिता श्रीजी** म.सा., प.पू. **प्रियनंदिता श्रीजी** म.सा.
प.पू. **विनम्रप्रभा श्रीजी** म.सा. आदि ठाणा 5

चातुर्मास भव्य प्रवेश 15 जुलाई 2018, रविवार

को मंगलकारी चातुर्मास प्रवेश के पुनित अवसर पर पधारने हेतु आपकों हमारा भावभरा आमंत्रण हैं।
चातुर्मासिक प्रवेश की शुभ वेला में आप सभी पधारकर संघ शासन की शोभा बढ़ावे।

निवेदक

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ती पुजक श्रीसंघ, शहादा

चातुर्मास स्थल

श्री सुघोषा घंट मंदिर एवं दादावाड़ी
डोंगरगाँव रोड़, शहादा (जि नंदुरबार) महा.–425409

संपर्क सूत्र

सुमतीलाल खिंवसरा (अध्यक्ष)– 9881648278, सुभाषचंद छाजेड (सेक्रेटरी)– 9405230309

कार्यकर्त्ता

कचरूलाल नाहटा–9422791459, सुरेशचंद बैद – 9423494209, पारस नाहटा–9420443551
प्रदिप नाहटा– 9421614419, प्रविण लुणिया–9766204844, राजेश नाहटा–9422894183
जयप्रकाश कोचर–9421528698, रमेश खिवसरा–9403336969

निम्बाहेडा प्रतिष्ठा में इतिहास रचा गया

चित्तोड जिले के निम्बाहेडा नगर की प्राचीन दादावाडी का जीर्णोद्धार पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से संपन्न हुआ।

दादावाडी परिसर में श्री मुनिसुव्रतस्वामी परमात्मा का जिनमंदिर बना। उसकी प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में प्रथम ज्येष्ठ वदि 9 बुधवार ता. 9 मई 2018 को अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

पूज्यश्री ने चितौड नगर में ता. 6 को प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर शाम को विहार कर ता. 7 को निम्बाहेडा में प्रवेश किया। बोलियों का कीर्तिमान बना। जिन मंदिर एवं दादावाडी की दोनों ध्वजाओं का लाभ पारख परिवार श्री रतनसिंहजी शेरसिंहजी ने लिया। मूलनायक परमात्मा को बिराजमान का लाभ श्री सुरेन्द्रकुमारजी दीपकजी अखिलेशजी अक्ष चौधरी रांका परिवार ने लिया। वासुपूज्य परमात्मा को श्री अभयकुमारजी वीरेशकुमारजी बोडाना ने तथा श्री लोकेशकुमारजी राठौड परिवार ने शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु को बिराजमान किया। गौतमस्वामी को अशोककुमारजी सुरेन्द्रककुमारजी महावीरजी गांग, आचार्य जिनकान्तिसागरसूरि प्रतिमा को श्री सुरेन्द्रकुमारजी दीपकजी अखिलेशजी अक्ष चौधरी रांका परिवार ने लिया। जिन मंदिर पर स्वर्णकलश श्री जीवराजजी खटोड परिवार चित्तौड वालों ने लिया। दादा जिनदत्तसूरि व जिनकुशलसूरि की प्रतिमा बिराजमान का लाभ श्री रतनसिंहजी ललितकुमारजी पारख परिवार ने, मणिधारी का लाभ श्री शांतिलालजी दक, चौथे दादा व नाकोडा भैरव का लाभ श्री सौभागमलजी हस्तीमलजी कमलकुमारजी प्रकाशचंदजी डागा परिवार ने लिया। अंबिका देवी का सुरेन्द्रजी चौधरी परिवार ने, गोरा भैरव का प्रभातजी कडावत व काला भैरव का डागा परिवार ने लिया। नाग देवता को बिराजमान का लाभ श्री समरथमलजी नलवाया ने लिया।

प्रतिष्ठा के गुरुपूजन किया गया। गुरुपूजन का लाभ श्री सुरेन्द्रजी चौधरी परिवार ने तथा कामली का लाभ श्री विनोदजी जैन बिजयनगर वालों ने लिया। जिन मंदिर के द्वारोद्घाटन का लाभ श्री दिलीपजी महावीरजी पामेचा तथा दादावाडी के द्वार का लाभ श्री राठोड व बेरवा परिवार ने लिया। निम्बाहेडा नगर की यह प्रतिष्ठा अपने आप में एक इतिहास बनी।

निम्बाहेडा में कुशल कान्ति मणि मार्ग बनाने का निर्णय

निम्बाहेडा नगर में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी की प्रतिष्ठाा के पावन अवससर पर ता. 9 मई 2018 को राजस्थान सरकार के नगर आवासन मंत्री श्री श्रीचन्दजी कृपलानी का पदार्पण हुआ। श्री कृपलानीजी ने पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का सानिध्य प्राप्त कर उनसे आशीर्वाद लिया। प्रवचन श्रवण किया।

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से श्री कृपलानीजी ने दादावाडी के मार्ग का 'श्री कुशल कान्ति मणि मार्ग' नाम घोषित किया। श्री संघ की ओर से उनका हार्दिक अभिनंदन किया गया तथा इस घोषणा को अहोभाव से बधाया।

सूरत में प्रवेश 15 जुलाई को

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. ठाणा 2 एवं पू. साध्वी श्री अनंतदर्शनाश्रीजी म. ठाणा 3 का चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश बाड़मेर जैन श्रीसंघ के तत्वावधान में रविवार 15 जुलाई 2018 को होगा। पूज्यश्री अभी सूरत में बिराज रहे हैं। उनकी प्रेरणा से वेस्टर्न शिखरजी खरतरगच्छ उपाश्रय लिया गया। चातुर्मास प्रवेश से पूर्व नवसारी चिखली आदि क्षेत्रों में विचरण करेंगे।

मंगलवाड में प्रतिष्ठा संपन्न

चित्तौड़गढ़ जिले के मंगलवाड चौराहे पर बने नवनिर्मित श्री वासुपूज्य जिन मंदिर की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में तीन दिवसीय समारोह के साथ ता. 13 मई 2018 प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल 13 रविवार को संपन्न हुई।

पूज्यश्री के शिष्य रत्न पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ।

इस भव्यातिभव्य शिखरबद्ध मंदिर का निर्माण पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री की प्रेरणा से श्री जैन श्वेताम्बर कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट, गज मंदिर, केशरियाजी द्वारा किया गया। इस मंदिर निर्माण के लिये विशाल भूखण्ड अर्पण किया श्री शांतिलालजी मांडावत परिवार, श्री किशनलालजी सांखला परिवार, श्री मदनलालजी मेहता परिवार, श्री निर्मलकुमारजी बलाला परिवार ने!

प्रतिष्ठा समारोह का प्रारंभ ता. 11 मई को पूज्य आचार्यश्री एवं साधु साध्वी मंडल के मंगल प्रवेश के साथ प्रारंभ हुआ। विविध पूजाओं का आयोजन हुआ। ता. 12 को भव्य वरघोडा संपन्न हुआ। वरघोडे के पश्चात् ध्वजा, कलश, बिराजमान आदि के चढावे संपन्न हुए।

ता. 13 को मंगल मुहूर्त्त में पूज्य आचार्यश्री की भक्ति व मंत्रोच्चारणों के साथ परमात्मा गादीनशीन किये गये।

साथ ही गौतमस्वामी, दादा जिनदत्तसूरि आदि प्रतिमाऐं प्रतिष्ठित की गई। प्रतिष्ठा के मंगल दिन फलेचुन्दडी का भव्य आयोजन किया गया। ता. 14 को द्वारोद्घाटन संपन्न हुआ। मंगलवाड चौराहे में लगभग 200 जैन परिवार निवास करते हैं। सभी घर स्थानकवासी संप्रदाय के अनुयायी होने पर भी प्रतिष्ठा में जो अनूठा वातावरण बना, वह जैन एकता का प्रतीक था।

मंगलवाड में पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ने 15 दिन की स्थिरता कर पूरे श्री संघ में एकता व परमात्म भक्ति का वातावरण निर्मित किया।

वंशपरम्परागत ध्वजा का लाभ श्री भोपालसिंहजी शांतिलालजी राकेशजी गौतमजी महावीरजी मांडावत परिवार ने लिया। स्वर्णकलश का लाभ श्री बाबुलालजी बोहरा सांचोर वालों ने लिया। मूलनायक बिराजमान श्री मीठूलालजी जोरावरसिंहजी हिम्मतकुमारजी पवनकुमारजी ओस्तवाल परिवार ने लिया। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ बिराजमान का लाभ श्री हस्तीमलजी उमरावचंदजी ओस्तवाल परिवार ने, महावीर स्वामी का लाभ श्री मोहनलालजी मदनलालजी मेहता परिवार ने लिया।

गौतम स्वामी का लाभ श्रीमती पवनबाई मांगीलालजी परमार बाली कोयम्बतूर ने तथा दादा गुरुदेव का लाभ श्रीमती पुष्पकंवर बलवंतराजजीसा. भंसाली परिवार जोधपुर उदयपुर वालों ने लिया। नाकोडा भैरव का लाभ श्री मोहनलालजी मदनलालजी मेहता ने तथा पद्मावती देवी का लाभ श्री अंतिमकुमारजी अतुलकुमारजी अनमोलकुमारजी गोखरू परिवार ने लिया।

गुरु पूजन का लाभ श्री बाबुलालजी मोतीलालजी घेवरचंदजी बोहरा परिवार सांचोर वालों ने तथा कामली का लाभ श्री भोपालचंदजी शांतिलालजी मांडावत परिवार ने लिया।

भूमिदाता परिवार का अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर पूज्य आचार्य श्री ने परमात्म-भक्ति की महिमा बताई। पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने यहाँ के श्री संघ की भाव भक्ति की अनुमोदना की। इस मंदिर के निर्माण में गज मंदिर के महामंत्री श्री गजेन्द्रजी भंसाली का जबर्दस्त पुरूषार्थ रहा। सोमपुरा श्री विनोद सोमपुरा एवं शिल्पी श्री प्रवीणभाई सिंघी का बहुमान किया गया। विधि विधान हेतु श्री हेमन्तभाई मक्षी से तथा संगीतकार दीपक करणपुरिया का आगमन हुआ।

तृतीय वाचना शिविर सम्पन्न

श्रुत गंगा में नहाये स्वाध्यायी

कुशल वाटिका, बाडमेर का परिसर जैसे आज चहक रहा था! चहक-महक थी ज्ञान के खिलखिलाते पुष्पों की! केयुप द्वारा आयोजित तृतीय वांचना शिविर को पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के सुशिष्य पू. मुनिवर्य श्री मनितप्रभसागर जी म.सा. की सुवासित निश्रा प्राप्त हो रही थी।

पूरा परिसर शिविरार्थियों की मुस्कान से आनंदित था। 1 जून से 5 जून तक चार सौ से अधिक श्रुतप्रेमी संसार के साधनों की सुविधाएँ छोडकर जैसे अपने आपको कष्टों की कसौटी पर तपाकर कुन्दन सा रूप देने को तैयार हुए थे।

कुशल संचालक रमेश भाई लूंकड-इचलकरंजी द्वारा गुरुवंदन आदि करवाये गये।

प्रभु वीर की तस्वीर के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन किया गया। तदुपरान्त संयोजक श्री पुरुषोत्तम जी सेठिया द्वारा एवं केयुप अध्यक्ष रतनजी बोथरा द्वारा अभिव्यक्ति दी गयी।

जैसे ही पू. मुनिश्री मनितप्रभजी द्वारा अमृतमयी वाणी की बरसात होनी शुरू हुई कि समय थम सा गया। सभी के मन और नयन उनकी ओर ही एकाग्र थे।

मुनिवर ने शिविर की भूमिका समझाते हुए पाँच सूत्र दिये- समय की प्रतिबद्धता, अनुशासन, सुविधाओं का अल्पतम उपयोग, जिनवाणी के प्रति अधिकतम समर्पण और परस्पर विनय वात्सल्य का वातावरण।

एक भी क्षण व्यर्थ गंवाना न मुनिश्री को स्वीकार्य था, न शिविरार्थियों को।

तुरन्त दूसरी कक्षा का प्रारंभ हुआ। अब वक्ता बदल गये थे। साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. ने कर्मवाद पर अपनी सटीक व्याख्या प्रस्तुत की जो कि स्वादिष्ट व्यंजन की भाँति मधुरता से भरी थी।

पुनः 11.45 से 12.30 तक प्रश्नोत्तर खुले मंच का आयोजन हुआ। कुछ प्रश्न मुनिश्री ने पूछे और उत्तर मिलने अथवा न मिलने पर उनकी मार्मिक व्याख्या प्रस्तुत की-

जैसे पास-पास में रहते हैं पर एक दूसरे का काम नहीं करते।

उत्तर स्वरूप पाँच इन्द्रियों की महत्ता बताते हुए उन्होंने शिविरार्थियों को जीवन के क्रमिक विकास के बारे में बताया।

भोजन होते ही सारे श्रुत-पिपासु सुखसागर प्रवचन मण्डप में उपस्थित थे।

दो बजते ही ढाई द्वीप (जैन भूगोल) की जानकारी हेतु पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. उपस्थित थे। जैन भूगोल अपने आप में अद्‌भुत है, उसको एक क्लास में ही सम्पूर्ण तौर पर समझ लेना संभव नहीं हो सकता।

भूमिका के बंधते-बंधते एक घण्टा कहाँ पूरा हुआ, पता ही न चला।

इसके बाद आवश्यक कार्यों की सम्पन्नता हेतु पाँच-सात मिनट की छुट्‌टी हुई। यह छुट्‌टी छह क्लासों के बीच चार बार होती थी। सबसे बड़ा आनंद तो यह था कि दोपहर की जलती प्रकृति के बीच भी शिविरार्थी शांति से उपस्थित थे। निस्संदेह जहाँ जिनवाणी की शीतल फुहारे बरस रही हो, वहाँ सूरज की तपन का अनुभव नहीं हो सकता।

दोपहर में धार्मिक मनोरंजन हेतु हाउजी गेम संचालित किया गया।

इसके बाद मुनिश्री ने प्रतिक्रमण के सूत्रों का अर्थ बतलाया। अब शाम के छह बज रहे थे, शरीर की पुकार पर छुट्‌टी जरूरी थी।

ठीक साढ़े सात बजे मुनिसुव्रत प्रभु चैत्य का प्रांगण प्रभु भक्तों से भरा हुआ था। म्हारा वहाला प्रभु, कृपा करो..... जैसे भजनों ने भक्तों को भक्ति के सागर में डूबा दिया। शाम की यह प्रभु भक्ति..... मुनि श्री मनितप्रभ जी म.सा. एवं श्रेयांसप्रभजी म.सा. के द्वारा जो भक्ति सरिता बहती, वह उत्तरोत्तर लम्बी होती रही। भक्ति का यह आनंद शिवत्व की ओर ले जाने वाला था।

शाम का प्रतिक्रमण, पाँचों ही दिन पू. मुनि श्री विरक्तप्रभजी एवं पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभजी द्वारा सम्पन्न करवाये गये।

घडी दस बजा रही थी। एक तरफ शिविर में पाये ज्ञान के कारण श्रुतप्रेमी आनंदित थे और गुरु भगवंत सफलता के कारण प्रसन्न थे।

शिविरार्थी निद्राधीन हुए। अगले सूर्योदय की ललिमा उन्हें उत्सुक बना रही थी।

साध्वी श्री शासन प्रभाश्रीजी आदि के द्वारा ठीक साढे पांच बजे भक्तामर, दादागुरुदेव इकतीसा सम्पन्न होते ही प्रबुद्ध चिन्तक श्री मनितप्रभजी म.सा. ने जैन दर्शन के अप्रतिम सिद्धान्त अनेकान्तवाद के रहस्यों को प्रकट किया।

6.16 बजे सामूहिक जिनमंदिर दर्शन उपरान्त प्रभु पूजा आदि आवश्यक कार्य सम्पन्न हुए।

मुनिश्री की दृष्टि घडी पर थी। वे समय के साथ चलना चाहते है। अत: समय सारिणी के अनुसार 9.45 प्रवचन सभागार में उपस्थित हो गये।

आज उनके प्रवचन का विषय था हमारा परिधान, हैयर स्टाईल और सौंदर्य प्रसाधन सामग्रियों! विविध दृष्टि कोणों से प्रकट नवनीत अद्‌भुत था। अनेक शिविरार्थियों ने संस्कृति-संरक्षण हेतु इस संदर्भ ने नियम ग्रहण किये।

जैन धर्म का कर्मवाद अतीव सूक्ष्म और विशिट है, इस सत्य को उजागर करते हुए साध्वी डॉ नीलांजनाश्रीजी म. ने जैन कर्मवाद का गहराई से विश्लेषण प्रस्तुत किया। पाँचों दिनों तक उनकी प्रवचन माला चलती रही। उनके वक्तव्य से जनसमूह प्रभावित था।

इसके बाद प्रश्नोत्तर खुला मंच में शिविरार्थियों ने मुनिश्री के सम्मुख विविध जिज्ञासाएँ प्रस्तुत की एवं समाधान पाकर आनंदित हुए।

इसके बाद 2 बजे से 5.30 तक की दोपहर वाली प्रथम कक्षा में ढाई द्वीप, चौदह राजलोक, स्वर्ग, नरक, जम्बू आदि द्वीपों की सरल व्याख्या साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. ने प्रस्तुत की।

गर्मी का पारा थोडा उतर रहा था, हवाएँ भी चल रही थी, फिर भी वातावरण की उष्णता बरकरार थी। अत: दोपहर में साहित्य सर्जक मुनिश्री मनितप्रभसागरजी द्वारा लिखित जीवन-प्रबन्धन पर Open book Exam लिया गया।

प्रभु भक्ति, प्रतिक्रमण सुचारू रूप से सम्पन्न करके श्रद्धालु जन अगले श्रुत-प्रभात के इन्तजार में निद्राधीन हुए।

भक्तामर आदि के बाद 45 मिनट तक पात्रता के विकास पर मार्मिक उद्‌बोधन मुनि श्री मनितप्रभजी द्वारा दिया गया। पात्रता के कारण ही चण्डकौशिक सर्प तिर गया और अपात्रता के कारण गीतार्थ जमाली मुनि का पतन हुआ। पात्रता विकास हेतु उन्होंने स्वाध्याय और सदाचरण पर जोर दिया।

आज शिविर का तीसरा दिन चल रहा था। मुनिश्री ने अपनी ओजस्वी शैली में रत्नत्रयी में से प्रथम सम्यग्दर्शन पर बहुत ही हृदय स्पर्शी व्याख्या प्रस्तुत की। इसके बाद के दो दिन के प्रवचन भी सम्यग्दर्शन की महिमा से ही ओतप्रोत रहे।

विविध ग्रन्थों के संदर्भो में उन्होंने विविध कथानकों द्वारा सम्यग्दर्शन को धर्म-महल की नींव के रूप में बताया। 'सद्‌दा परम दुल्लहा' श्रद्धा परम दुर्लभ है। यदि एक बार भी जिनवाणी पर उत्तम श्रद्धा हो जाये तो ज्ञान-चारित्र ही नहीं, सिद्धि स्वयं उसका चरण-स्पर्श पाने के लिये उत्सुक रहती है।

मुनिश्री ने कहा-धनवान, बलवान, शक्तिमान् भले ही न बनो, पर सम्यग्दर्शनी बनना जरूरी है।

धनपाल, नयसार, अंगारमर्दकाचार्य आदि के कथानकों से कथ्य के तथ्य को स्पष्ट किया गया।

पूर्ववत् कर्मवाद, प्रश्नोत्तरी, ढाई द्वीप आदि की कक्षाएँ सुव्यवस्थित रूप से चली।

आज दोपहर की दूसरी कक्षा बहिन म. साध्वी डॉ विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. द्वारा ली गयी। उष्ण ऋतु के लम्बे विहार

करके पू. माताजी म. रतनमाला श्रीजी म.सा. आदि ठाणा पाँच का आज आगमन हुआ था। वातावरण में इस कारण अतिरिक्त प्रसन्नता थी। उनके द्वारा तीन दिनों तक चार रत्नों की व्याख्या की गयी-माफ करो, भूल जाओ, आत्म-विश्वास, वैराग्य।

चार रत्नों को सहेजने-समझने और सजाने से जीवन का महल मूल्यावान् बन जाता है, अतः इनके मालिक बनकर हम जीवन को सार्थक रूप दे सकते हैं।

दोपहर के धार्मिक कार्यक्रम का संचालन शासनरत्न रमेश लूंकड ने अत्यन्त सुरूचिपूर्ण पद्धति से सम्पन्न करवाया।

इस शिविर में लगभग हर क्लास के बाद रमेश भाई तीन प्रश्न गुरु भगवंतों द्वारा प्रदत्त प्रवचनों में से पूछते थे, उसमें भी शिविरार्थियों की सुरूचि प्रकट होती थी।

अगले दो दिनों में 5.30 से 6.15 तक द्रव्य-भाव, ज्ञान-क्रिया एवं निश्चय-व्यवहार पर मननीय व्याख्या पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा प्रस्तुत की गयी।

चौथे दिन दोपहर को धार्मिक कार्यक्रम अद्‌भुत था 'धार्मिक क्रिकेट मैच' इसका पूरा निर्देशन करने में तिरुपात्तुर के हर्षित ललवाणी, ऋषभ, प्रेम, गौरव कवाड, इन चारों की मेहनत रही।

ढाई घण्टे तक चले इस कार्यक्रम में सभी को खूब आनंद आया।

यह तो हुई युवाओं के शिविर की चर्चा। बालकों के शिविर को पू. मुनि श्री समयप्रभजी म., मुनि श्री विरक्तप्रभजी म. एवं साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म. ने संचालित किया।

भगवान महावीर, नवकार, खरतरगच्छ का इतिहास, तीर्थकरों के लंछन व माता-पिता आदि विविध विषयों की सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की। प्रश्नोत्तरी करके उन्होंने बालकों की जिनधर्म में रूचि जगायी और उन्हें धर्म पालन हेतु बहुत सारे नियम भी दिलवाये। बच्चों की रूचि इतनी ज्यादा थी कि वे समय से पहले ही अपनी सीट रिजर्व कर लेते थे।

5 जून को सभी शिविरार्थी उदास थे। आज उनसे स्वाध्याय का लाभ छीन जाने वाला था।

डॉ रणजीतमल जी मेहता, अमित बाफना, पूजा डूंगरवाल, दिनेश भंसाली, भावना संखलेचा, रजत सेठिया, जगदीशचंद्रजी सिंघवी, गाजियाबाद के चारू जैन, उषा बोथरा सभी की एक ही अभिव्यक्ति थी कि यह शिविर दस दिन का होता तो और ज्यादा आनंद आता।

संयोजक पुरुषोत्तमजी सेठिया ने समस्त सहयोगियों के प्रति आभार अभिव्यक्त किया। बाडमेर नगर परिषद सभापति श्री लूणकरणजी बोथरा, नाकोड़ा ट्रस्टी पीरचंदजी वडेरा, भरत छाजेड आदि ने भावों को व्यक्त किया और शिविर को आज की आवश्यकता बताया।

बहिन म.सा. ने कहा कि गुरु की प्रत्यक्ष उपस्थिति में जब शिष्य उनके ही कार्यों को सफल रूप से सम्पन्न करते

हुए देखते है तो वे भी अत्यन्त प्रसन्न हो जाते है। कृतकत्य-धन्य हो जाते है। भाई-बहिन मनितप्रभजी-नीलांजनाश्रीजी की जोडी ने सुन्दर ढंग से जो शिविर संचालन किया है, उसके लिये उन्हें बधाई व अभिनंदन है।

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. ने कहा कि हमारे शिविरार्थियों पर हमें नाज है जिन्होंने अत्यन्त प्रेम से हमारे अनुशासन एवं नियमों को स्वीकार किया। संयोग-वियोग के बाद विनियोग ही शिविर का सार्थक फलितार्थ है।

कुशल वाटिका ट्रस्ट का आवास आदि समस्त व्यवस्थाएँ उपलब्ध करवाने में पूर्ण सहयोग-अपनत्व रहा।

विहार सेवा से लेकर शिविर के समस्त कार्यो में जिनशासन विहार सेवा ग्रुप का परिपूर्ण सहकार रहा।

खरतरगच्छ महिला परिषद्, आदिनाथ महिला मण्डल, कुशल वाटिका महिला मण्डल, पार्श्व मण्डल, चिन्तामणि समर्पित ग्रुप, ज्योतिदीप महिला मण्डल, माँ सच्चिया भक्त मण्डल, बाड़मेर का भोजन व्यवस्था में पूर्ण सहयोग रहा।

समस्त मण्डलों का केयुप के द्वारा बहुमान किया गया। किट लाभार्थी परिवार भंवरलालजी विरधीचंदजी छाजेड-हरसाणी, संयोजक पुरुषोत्तम जी सेठिया एवं संचालक रमेशजी लूंकड का अभिनंदन किया गया।

समापन समारोह का संचालन श्री रमेश लूंकड ने किया। यह शिविर अब तक सफलतम एवं कीर्ति के झण्डे स्थापित करने वाला था। लगभग 500 शिविरार्थियों ने शिविर में स्वाध्याय का रसपान किया था और उनका बहुमान केयुप द्वारा किया गया। बाडमेर, बैंगलोर, चेन्नई, गाजियाबाद, भोपाल, तिरुपात्तुर, अहमदाबाद, सूरत, सांचोर, जोधपुर, चौहटन, सियाणा, सिवाना, जयपुर, धोरीमन्ना, गदग, इचलकरंजी, मुम्बई, बालोतरा, आदि अनेक स्थलों से भाग लेकर शिविरार्थियों ने शिविर में चार चाँद लगाये। समापन समारोह में केयुप की केन्द्रीय एवं उपशाखाओं के विशिष्ट सदस्य सुरेश लूणिया-कोषाध्यक्ष, प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल- सचिव, रमेश लूंकड़-सह सचिव, रतन बोथरा, गौतम मालू, चंपालाल वाघेला केएमपी की सचिव नर्मदा छाजेड़ आदि उपस्थित थे। इस प्रकार केयुप का यह तृतीय वांचना शिविर इतिहास के गौरवशाली पृष्ठों पर अंकित हो गया।

बाडमेर में अभूतपूर्व शासन प्रभावना

पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. सा. पू. समयप्रभसागरजी म. पू. विरक्तप्रभसागरजी म. पू. श्रेयांसप्रभसागरजी म. का बाडमेर के उपनगरों में परिभ्रमण जारी है।

धर्म प्रभावना के उद्देश्य से वे सर्वप्रथम जूना केराडु मार्ग पधारे।

अपने ही उपनगर में बाडमेर नगर के एवं बोथरा परिवार के तीनों रत्नों (पू. मुनि समय-विरक्त-श्रेयांसप्रभजी म. सा.) के दीक्षा के बाद प्रथम बार आगमन से संघ परम उल्लसित था। संघ ने मंगल कलशों के द्वारा बधाया।

इस अवसर पर पू. मुनि मनितप्रभसागरजी ने संयम को जीवन का श्रेष्ठतम मार्ग बताया। पू. मुनि श्री समयप्रभजी म. ने जन्मभूमि के प्रति कर्त्तव्यों की व्याख्या की।

पू. मुनि श्री विरक्तप्रभजी म. ने जननी और जन्मभूमि को स्वर्ग से भी गौरवशाली बताया। मुनिश्री श्रेयांसप्रभजी म. ने माँ व गुरु के उपकारों का वर्णन किया। पू. बहिन म.सा. ने मनुष्य जीवन की सार्थकता का उपाय बताया।

जूना केराडु मार्ग जैन संघ के निवेदन पर पूज्य श्री दस दिवस वहाँ बिराजे। दस दिवसीय प्रवचन माला का कार्यक्रम अनूठा रहा। इस क्षेत्र में पहली बार प्रतिदिन 900 से 1000 लोगों ने प्रवचन-सुधा के पान का लाभ लिया। पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. के हृदयस्पर्शी आध्यात्मिक प्रवचनों में कभी पात्रता के विकास की बात होती तो कभी

अवसर से सदुपयोग की। कुल मिलाकर व्यवहार, आचार, धर्म और अध्यात्म पर आधारित प्रवचनों के रंग में माहोल जबरदस्त तौर पर रंगीन हो गया।

सभी ने एक स्वर से यही कहा कि हमारे तो चातुर्मास लग गया, ऐसा लगता है।

दोपहर के तत्त्वज्ञान की कक्षा मुनि श्री समयप्रभजी ने ली जिसमें कभी कभी 250-300 व्यक्तियों की उपस्थिति रहती। बालक-बालिकाओं के सूत्र कंठस्थीकरण, शुद्धिकरण का दायित्व पू. मुनिश्री विरक्तप्रभजी म. ने बखूबी संभाला। दस दिनों के दौरान 500 घरों को सुपात्रदान का लाभ मिला।

वहाँ से पू. मुनिवर रैन बसेरा जैन संघ में पधारे। वहाँ श्रोताओं की कल्पनातीत उपस्थिति रही। चार दिन तक प्रतिदिन 500 से 600 श्रोता तात्त्विक प्रवचनों से लाभान्वित होते रहें।

यहाँ दोपहर तत्त्वज्ञान कक्षा का दायित्व मुनि श्री मनितप्रभजी म. एवं विरक्तप्रभजी ने संभाला।

21 जून को मुनि श्री समयप्रभजी म. की 25 वीं वर्धमान ओली का पारणा सानंद सम्पन्न हुआ।

चार दिनों के प्रभावशाली प्रवास के बाद पूज्यश्री ने अपने कदम हमीरपुरा क्षेत्र की ओर बढा दिये। दोनों क्षेत्रों में बाबूलालजी छाजेड़ संचालन किया। कार्यक्रम की सफलता में संघ के समस्त सदस्यों का सेवा, भक्ति आदि में अत्यन्त श्रद्धा और प्रेम का वातावरण रहा।

पर्युषण महापर्व की आराधना हेतु स्वाध्यायी आमंत्रित करें

आपके क्षेत्र में साधु-साध्वी भगवंतो के चातुर्मास का योग नहीं बना है। आप अपने क्षेत्र में पर्युषण महापर्व की आराधना खरतरगच्छ की समाचारी व परम्परानुसार कराना चाहते है तो आप अतिशीघ्र हमें पत्र दे। विधि-विधान के साथ आपके यहाँ हमारे प्रशिक्षित स्वाध्यायियों द्वारा आराधना करवाइ जाएगी।

निवेदक

रमेश लूंकड (सयोजक, स्वाध्यायी प्रकोष्ठ)

(केयुप) अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद, वॉटसेप नं. 9423286112

बादामीदेवी सीतादेवी आराधना भवन का उद्घाटन

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. पू. नयज्ञसागरजी म. पू. मलयप्रभसागरजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री चंपाश्रीजी म. की शिष्या पू. गणिनी पद विभूषिता श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पू. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में अहमदाबाद-नडियाद मुख्य मार्ग पर अहमदाबाद से 20 कि.मी. दूर हाथीजण में सोसायटी में संघवी श्री मानमलजी वंसराजजी भंसाली परिवार द्वारा नवनिर्मित श्रीमती बादामीदेवी सीतादेवी आराधना भवन का उद्घाटन ता. 30 मई 2018 बुधवार को किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में एल. डी. रिसर्च इन्स्टीट्यूट के डायरेक्टर पंडित प्रवर श्री जितेन्द्र बी. शाह पधारे थे।

इस आराधना भवन के उद्घाटन की विनंती करने भंसाली परिवार केशरियाजी तीर्थ पूज्यश्री की सेवा में उपस्थित हुआ। उनकी भावभरी विनंती स्वीकार कर उग्र विहार कर पूज्यश्री निश्रा प्रदान करने पधारे।

इस अवसर पूज्यश्री ने आराधना शब्द की महिमा समझाते हुए कहा- हमारे जीवन का एक ही लक्ष्य है- आराधना! यह आराधना भवन श्रावकों की धर्म आराधना के लिये निर्मित हुआ है। पूज्यश्री की प्रेरणा प्राप्त कर संघवी परिवार ने अधिक से अधिक सामायिक करने का संकल्प लिया। पूज्यश्री ने इस अवसर पर संघवी मानमलजी की उदारता एवं पूज्य गुरुदेव के प्रति लगाव का स्मरण करते हुए कहा- जहाज मंदिर के वे संस्थापक अध्यक्ष थे। उनके पुरूषार्थ के परिणाम स्वरूप जहाज मंदिर वर्तमान में आकार ले सका है। उन्होंने कहा- संघवी परिवार का योगदान हर क्षेत्र में है।

पूज्य उपाध्यायश्री ने संघवी मानमलजी की आत्मीयता का स्मरण करते हुए कहा- संघवी परिवार हर क्षेत्र में आगे रहता है।

पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. के भावों को अभिव्यक्त करते हुए साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. ने कहा- आज यहाँ त्रिवेणी संगम है। पूज्य आचार्यश्री, उपाध्यायश्री एवं पू. गणिनीश्री इस प्रकार त्रिवेणी संगम की निश्रा मिली है। संघवी परिवार सौभाग्यशाली है।

संघवी श्री वंसराजजी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के राष्टीय चेयरमेन संघवी श्री अशोकजी भंसाली ने कहा- यह हमारे परिवार का सौभाग्य है कि हमें आराधना भवन निर्माण करने का लाभ प्राप्त हुआ है। उन्होंने पूज्यश्री के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा अभिव्यक्त करते हुए कहा- पूज्यश्री के श्रीचरणों में सफलता का वास है। हम और हमारा परिवार ऐसे गुरुदेव को पाकर प्रतिक्षण धन्यता का अनुभव करते हैं।

मुख्य अतिथि श्री जितेन्द्र भाई ने कहा- पूज्यश्री की पावन प्रेरणा से शासन के अनेक कार्य संपन्न हो रहे हैं। भंसाली परिवार ने आराधना भवन का निर्माण करवाकर पुण्यलाभ प्राप्त किया है। अभी तक इस परिवार की ओर से छह आराधना भवनों का निर्माण स्थान स्थान पर हो चुका है। मेरी तो कामना है कि इसी प्रकार निरंतर शासन के कार्य लगातार करते रहे। यह ज्ञातव्य है कि संघवी भंसाली परिवार ने गढसिवाना में विशाल आराधना भवन, चंपावाडी सिवाना में आराधना भवन, अहमदाबाद शाहीबाग में खरतरगच्छ आराधना भवन, गिरनार तीर्थ पर आराधना भवन, नवरंगपुरा दादा साहेब नां पगलां में आराधना भवन का लाभ प्राप्त किया है। यह छठा आराधना भवन परिवार की ओर से बनाया गया है।

इस अवसर पर श्री खीमराजजी बालड, श्री रिखबचंदजी झाड़चूर आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। समारोह का सफल संचालन श्री मुकेश आर. चौपडा ने किया। इस अवसर पर अहमदाबाद आदि स्थानों से बडी संख्या में लोग पधारे थे। प्रवचन के पश्चात् स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। समारोह को सफल बनाने के लिये केयुप अहमदाबाद का पुरूषार्थ अनुमोदनीय रहा।

पूज्यश्री का विहार

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. अपने शिष्य पूज्य बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. के साथ विहार करते हुए ता. 21 मई को केशरियाजी पधारे। यहाँ पूज्यश्री की निश्रा में ता. 24 को बीसड उपधान तप एवं कन्या शिविर का वरघोडा निकाला गया तथा तपस्वियों के बहुमान का आयोजन किया गया।

पूज्यश्री वहाँ से विहार कर ता. 29 को ओढव पधारे, जहाँ बाडमेर मित्र मंडल द्वारा भव्य सामैया किया गया। पूज्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। श्री बाबुलालजी बोथरा द्वारा स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। ता. 30 को हाथीजण में आराधना भवन के उद्घाटन के पश्चात् उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. आदि के साथ विहार कर ता. 2 जून को बडौदा पधारे। जहाँ खरतरगच्छ श्री संघ की ओर से भव्य सामैया किया गया। केशरियाजी के पश्चात् विहार में श्री खरतरगच्छ युवा परिषद् अहमदाबाद केयुप ने कार्यकर्ताओं की अनुमोदनीय सेवा रही। बडी संख्या में कार्यकर्त्ताओं ने विहार व वैयावच्च का लाभ लिया।

अहमदाबाद से बडौदा के विहार पथ में बडौदा खरतरगच्छ संघ एवं केयुप बडौदा ने पूरा लाभ लिया। बडौदा से विहार कर पूज्यश्री, उपाध्यायश्री आदि 8 जून 2018 को सूरत पाल नगर में प्रवेश करेंगे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में कुशल वाटिका में निर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

वहाँ प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् पूज्यश्री 17 जून को विहार कर सेलंभा, खापर, अक्कलकुआं, वाण्याविहिर, तलोदा, शहादा होते हुए 1 जुलाई 2018 को खेतिया पधारेंगे। वहाँ से पानसेमल, सेंधवा होते हुए इन्दौर पधारेंगे। जहाँ उनका ता. 22 जुलाई 2018 को चातुर्मासार्थ प्रवेश होगा।

त्रिदिवसीय स्वाध्यायी शिविर

इन्दौर नगर में स्वाध्यायी शिविर 27 से 30 जुलाई को प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु साध्वी भगवंतो की पावन निश्रा में इन्दौर नगर में त्रिदिवसीय स्वाध्यायी शिविर का आयोजन अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद के तत्त्वावधान में किया जायेगा।

स्वाध्यायी प्रकोष्ठ के संयोजक रमेश लूंकड ने बताया कि ता 28 जुलाई से 30 जुलाई तक चलने वाले इस स्वाध्यायी शिविर में स्वाध्यायियों को पर्युषण महापर्व की आराधना विधि सहित करवाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

जहाँ पर गच्छ के साधु-साध्वी भगवंतो का चातुर्मास नही है, वहाँ पर पर्वाधिराज पर्युषण की आराधना करवाने हेतु इन प्रशिक्षित स्वाध्यायीओं को भेजा जाएगा।

संयोजक लूंकड ने बताया कि जिन्हे दो प्रतिक्रमण/पंच प्रतिक्रमण कंठस्थ हो या पुस्तक देखकर करा सकते है वे भाई-बहिन (उम्र की कोई मर्यादा नहीं) इस स्वाध्यायी शिविर हेतु सादर आमंत्रित है।

पर्युषण महापर्व की आराधना में आवश्यक अष्टाह्निका प्रवचन, कल्पसूत्र, पंच प्रतिक्रमण, स्तुती-स्तवन आदि ग्रंथ एवं अन्य उपकरण अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद की ओर से भेंट दिए जाएगे। जिनशासन के इस महान सेवाकार्य में आपके सहयोग की अधिकतम् अपेक्षा है।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य मुनिराज **श्री मुक्तिप्रभ सागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म.** मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म. ठाणा 4 केशरियाजी तीर्थ बिराज रहे हैं। वहाँ से रतलाम, उज्जैन होते हुए ता. 22 जुलाई 18 को पूज्य आचार्यश्री के साथ चातुर्मासार्थ इन्दौर में नगर प्रवेश करेंगे।

पूज्य मुनि **श्री मनितप्रभसागरजी म.** समयप्रभसागरजी म. विरक्तप्रभसागरजी म. श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 4 एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म. डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म. विभांजनाश्रीजी म.ब्यावर से विहार कर जोधपुर, पचपदरा, बायतू होते हुए ता. 26 मई 2018 को बाडमेर कुशल वाटिका पधारे, जहाँ आपकी पावन निश्रा में ता. 1 जून से 5 जून तक वांचना शिविर का भव्य आयोजन चल रहा है। यह शिविर अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर के मुख्य लाभार्थी बने हैं कुशल वाटिका के माननीय अध्यक्ष श्री भँवरलालजी छाजेड परिवार!

पू. खान्देश शिरोमणि महत्तरा पद विभूषिता **श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.** विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 4 ने पालीताना से विहार कर बडौदा, राजपीपला, डेडियापाडा होते हुए ता. 31 मई को खापर पधारे। वहाँ से अक्कलकुआं, तलोदा, वाण्याविहिर, शहादा आदि क्षेत्रों में विहार करते हुए इन्दौर की ओर विहार करेंगे, जहाँ 22 जुलाई को पू. आचार्य श्री के साथ मंगल प्रवेश चातुर्मासार्थ होगा।

पू. प्रवर्तिनी **श्री शशिप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा जयपुर में बिराजमान है। जयपुर के विभिन्न उपनगरों में संस्कार शिविर आदि कई रचनात्मक कार्यों को आपकी निश्रा प्राप्त हो रही है।

पू. गणिनी पद विभूषिता पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका **श्री सुलोचनाश्रीजी म.** तपोरत्ना **श्री सुलक्षणाश्रीजी म.** आदि ठाणा का मुंबई की ओर विहार चल रहा है। वे जून के प्रथम सप्ताह में सोलापुर पहुँचेंगे। ता. 15 जुलाई को उनका जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्वावधान में चातुर्मासार्थ प्रवेश होगा।

पू. गणिनी पद विभूषिता मारवाड ज्योति **श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा अहमदाबाद में बिराज रहे हैं। शहर के उपनगरों में आपके प्रवचन हो रहे हैं। वहाँ से 6 जून को कच्छ की ओर विहार करेंगे। आपका चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश अंजार नगर में ता. 20 जुलाई 2018 को होगा।

पू. माताजी म. **श्री रतनमालाश्रीजी म.,** बहिन म. **डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा उदयपुर से राणकपुर, फालना, जहाज मंदिर, उम्मेदाबाद, जीवाणा, सिणधरी होते हुए बाडमेर की ओर विहार कर रहे हैं। पूज्याश्री बाडमेर में चल रहे वांचना शिविर में अपनी निश्रा प्रदान करेंगे। चातुर्मास प्रवेश फलोदी में 18 जुलाई को होगा।

पू. साध्वी **श्री विमलप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा अहमदाबाद बिराज रहे हैं। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् नंदुरबार की ओर उनका विहार होगा। चातुर्मास प्रवेश 23 जुलाई को होगा।

पू. साध्वी **श्री कल्पलताश्रीजी म.** का स्वास्थ्य एकाएक अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्हें पूज्य आचार्यश्री की आज्ञा से वाहन द्वारा अहमदाबाद लाया गया। वे राजस्थान हॉस्पीटल में स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। अहमदाबाद में कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् शंखेश्वर की ओर विहार करेंगे, जहाँ उनका चातुर्मास होगा।

अतिप्राचीन महाचमत्कारी

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ

के शास्त्र शुद्ध जीर्णोद्धार में लाभ लीजिये

पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा से मूलनायक परमात्मा का उत्थापन किये बिना शास्त्रशुद्ध जीर्णोद्धार हो रहा है। नूतन मंदिर निर्माण से जीर्णोद्धार में आठ गुणा फल शास्त्रकार भगवंतों ने बताया है। यह जीर्णोद्धार तो आचार्य भगवंत श्री सिद्धसेनदिवाकर द्वारा कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना द्वारा शिवलिंग में से प्रकट हुए एक अतिप्राचीन महा प्रभावशाली तीर्थ का हो रहा है। जीर्णोद्धार कार्य तीव्र गति से चल रहा है। इसमें आपके सहयोग की अपेक्षा है।

1,11,111.00 की राशि अर्पण कर जीर्णोद्धार सहभागी के रुप में संगमरमर की पट्टिका में अपने परिवार के दो नाम अंकित करवाकर महान् पुण्य लाभ प्राप्त करें।

संपर्क सूत्र

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ जैन श्वे. मारवाड़ी मूर्तिपूजक समाज ट्रस्ट

श्री अवंति पार्श्वनाथ चौक, दानी गेट, पो. उज्जैन-456 006 म. प्र.

फोन : (0734) 2555553 / 2585854

अध्यक्ष - हीरालाल छाजेड़-94068 50603, सचिव-चन्द्रशेखर डागा-94250 91340

जीर्णोद्धार समिति अध्यक्ष : पुखराज चौपड़ा-94251 95874

बैंक खाता - बैंक ऑफ़ बड़ौदा, उज्जैन (खाता नं. 05050100007820 / IFSC CODE-BARBOUJJAIN)

भारतीय स्टेट बैंक, उज्जैन (खाता नं. 63041232720/ IFSC - SBIN0030062)

पू. साध्वी **श्री अमितयशाश्रीजी म.** आदि ठाणा ने पाली से अहमदाबाद की ओर विहार किया है।

पू. साध्वी **प्रियस्मिताश्रीजी म.** आदि ठाणा 6 का चातुर्मास गौहाटी आसाम में होने जा रहा है। उनका 15 जुलाई 2018 को चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश होगा।

पू. साध्वी **श्री प्रियरंजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 3 चेन्नई बिराज रहे हैं। वे कुछ दिनों के पश्चात् बैंगलोर की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 6 ने केशरियाजी तीर्थ से सूरत की ओर विहार किया है। सूरत प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारने की

संभावना है।

पू. साध्वी **श्री प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 3 अहमदाबाद बिराज रहे हैं। वे 7 जून को सूरत

की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **श्री अनंतदर्शनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 3 केशरियाजी से विहार करते हुए बडौदा सूरत पधार रहे हैं।

वंशराजजी देसाई का समाधिमय मरण

बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्री

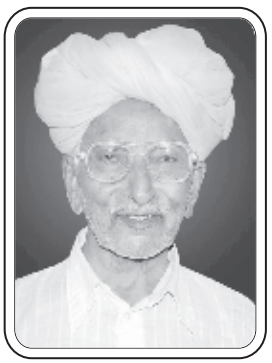

उन्होंने अपना श्रावक जीवन सफल किया। आराधक जीवन को उन्नत करते हुए मनुष्य जीवन पाना सार्थक कर लिया। ऐसा समाधि मरण तो संतो को भी दुर्लभ होत है। नौ दशक से भी उपर की जिन्दगी पाने पर भी उन्होंने न अपने जीवन काल में किसी भी प्रकार की छोटी-सी दवाई गोली ली और न किसी से सेवा करवायी। निसंदेह हम उनके ऐसे चमत्कारी जीवन की अनुमोदना करते हैं।

आज सिणधरी प्रवेश करते ही ज्योंहि प.पू. बहिन म. डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. को वयोवृद्ध श्रावकरत्न परम सेवाभावी श्री वंशराजजी देसाई के सामाधिमय मृत्यु की सूचना मिली, वे तुरन्त उनके घर पहुँचे और इस प्रकार की भावभरी अभिव्यक्ति दी।

गुरुवर्या श्री जी को परिजनों ने बताया कि अन्तिम समय तक हाथ की मुद्रा माला गिनने की ही रही। जिस दिन मृत्यु हुई उस दिन भी उनके चौविहार का पच्चक्खान था। उन्होंने हमें स्पष्ट निर्देश दे दिये थे कि चाहे मुझे कितने भी तकलीफ हो मुझे हॉस्पीटल लेकर मत जाना। हम उनके जीवन की क्या चर्चा करे, वे कितने ही वर्षो से संसार से पूरी तरह उदासीन हो गये थे।

परिवार में कौन आया कौन कहाँ हैं उन्हें इससे कोई मतलब नहीं था। हमने बहुन निवेदन किया-आप एक बार तो सुरत पधारो, हम आप जब कहेंगे यहाँ ले आयेंगे पर उन्होंने तो पूरी तरह जैसे संसार का त्याग कर लिया था। मात्र तीर्थयात्रा के उद्देश्य से जरूर सिणधरी से बाहर गये, अन्यथा तो किसी शहर में नहीं गये। जब देखो तब अरिहंत... अरिहंत... का जाप था।

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरि ने अपने संदेश में लिखा कि इस युग के वे महान श्रावक रत्न थे। हमारे सिणधरी चातुर्मास में उनके द्वारा की गयी गुरुभक्ति वैयावच्च अपने आप में आदर्श हैं।

क्रिया के प्रति वे जितने समर्पित थे उनका भावजगत भी उतना ही निर्मल था। उन्हें कभी भी किसी ने क्रोध करते नही देखा न उनमें किसी के प्रति कभी जैसे को तैसा का भाव था।

समाज में उनका गहरा प्रभाव था। उनके संकेत भी समाज में निर्णय बन जाते थे। हमने संघ और गच्छ का एक विशिष्ट श्रावक खो दिया है। यही प्रार्थना हैं कि दिवंगत आत्मा को निकट भविष्य में शीघ्र ही मुक्ति प्राप्त हो। इस अवसर पर परिजन भी धैर्य धारण करके उनके आराधक जीवन का अनुसरण करे।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर ने अपने बेटे घटाशंकर से धनिया लाकर मम्मी को देने का कहा।

घटाशंकर दौड कर बाजार गया और धनिया लाकर मम्मी को दे दिया।

जटाशंकर भीतर गया और धनिया का निरीक्षण करने लगा।

धनिये को देखते ही वह क्रोध में आया और बाहर खडे घटाशंकर के पास आकर जोर से बोला- तूं पागल है क्या! मंगाया था धनिया और लाया पोदीना! तुझे तो पागलखाने में भर्ती कर देना चाहिये। तूं धनिये और पोदीने का फर्क भी नहीं समझता!

घटाशंकर ने पल भर बाद धीरज के साथ धीरे से जवाब दिया- पिताजी, यदि इसी बात पर पागलखाने चलना है तो आपको भी मेरे साथ ही चलना होगा।

जटाशंकर बोला- क्या बकवास कर रहा है!

घटाशंकर बोला- इसलिये कि आप जिसे पोदीना कह रहे हो, मम्मी ने उसे मेथी कहा है। मतलब मेरी तरह आप भी नहीं पहचान पाये कि यह है क्या!

वस्तु मिलना और उसका सत्य परिचय होना, अलग बात है। मिलना आसान है, यथार्थ परिचय मुश्किल है। भ्रमणा को ही यथार्थ समझते हैं। तभी तो संसार का भ्रमण है। वस्तु के यथार्थ को समझना ही तो सम्यग्दर्शन है।

क्रोध को ऐसे टालना

क्रोध सोमवार को आये, तो कहना कि सप्ताह की शुरूआत है-आज नहीं करूंगा।
मंगलवार को आये, तो बोलना कि मंगल में अमंगल क्यों करूं।
बुध को आये, तो कहना कि बुध तो शुद्ध है-इसे अशुद्ध क्यों करूं।
गुरुवार को आये, तो बोलना आज तो गुरु का दिन है-मन में शान्ति रखना है।
शुक्रवार को आये, तो कहना कि शुक्र को तो शुक्रिया अदा करना है भगवान का।
शनिवार को आये, तो सोचना कि शनि के दिन घर में शनिश्चर क्यों आये।
और रविवार को आये, तो कहना-आज तो छुट्टी का दिन है।
खुश रहिये मुस्कराते रहिये और हां! कभी क्रोध ना कीजिये।

संकलन-मुमुक्षु शुभम् लूंकड, जोधपुर

खरतरगच्छ पेढ़ी की साधारण सभा 13 जून को

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी की साधारण सभा की बैठक आगामी 13 जून 2018 को सूरत-पाल में कुशल वाटिका में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में आयोजित की गई है। पेढ़ी के समस्त सदस्यों परम संरक्षक ट्रस्टी, संरक्षक ट्रस्टी, वंश परम्परागत ट्रस्टी व आजीवन सदस्यों सभी से निवेदन है कि इस बैठक में अवश्यमेव पधारें।

पदम टाटिया, महामंत्री

|| श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः|| श्री कुंथुनाथाय नमः || श्री महावीरस्वामिने नमः||

श्री आदिनाथाय नमः

अनंतलब्धि निधानाय गुरु गौतम स्वामिने नमः

खरतरविरुद धारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः

पूज्य गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

औद्योगिक पोपलीन नगरी बालोतरा में

भव्य चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे

आमंत्रण

आज्ञा प्रदाता
प.पू. गच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

दिव्यकृपा
प. पूज्या गुरुवर्या आगम ज्योति
स्व. प्र. श्री प्रमोद श्रीजी म.सा.

शुभ मंगल प्रवेश
आषाढ़ सुदि 11, सोमवार,
23 जुलाई 2018

प्रत्यक्ष कृपा
प. पूजनीया श्रमणीरत्ना माताजी म.
श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., प.पू. बहिन
म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

पावन सान्निध्य

परम पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
प. पू. साध्वी श्री डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.
प.पू. साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म.सा.
प.पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

चातुर्मास प्रवेश की मंगल वेला में आप पधार कर संघ को लाभान्वित करें।

विनित

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ

आयम्बिल शाला, बालोतरा (राज.)

महावीर चोपड़ा (अध्यक्ष)	पुरुषोतम सेठिया (उपाध्यक्ष)	धर्मेश चोपड़ा (सचिव)	राजूभाई सर्राफ (कोषाध्यक्ष)
94142 70702	94141 08313	94141 08191	8107119081

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

॥ श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥ श्री महावीरस्वामिने नमः॥

अनंतलब्धि निधानाय गुरु गौतम स्वामिने नमः
खरतरविरुद धारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः
पूज्य गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

रत्नगर्भा फलोदी नगरे

भव्य चातुर्मास प्रवेश समारोह

आज्ञा प्रदाता
प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

सकल श्रीसंघ को सादर आमंत्रण

पावन निश्रा
पूजनीया बहिन म.सा. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.
साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म.सा.
हमारी कुल दीपिका डॉ. साध्वी श्री विज्ञांजनाश्रीजी म.सा.
साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

प्रवेश का
शुभ मुहूर्त्त
आषाढ़ सुदि 6, बुधवार,
दिनांक 18 जुलाई 2018
प्रातः 8.00 बजे

दिव्यकृपा

प. पूज्या गुरूवर्या आगम ज्योति
स्व. प्र. श्री प्रमोद श्रीजी म.सा.

साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

साध्वी डॉ. विज्ञांजनाश्रीजी म.सा.

सकल श्रीसंघ को पधारने की हार्दिक विनंती करते है।

निवेदक

फलौदी श्री संघ के आदेश से निर्मलादेवी रतनचन्द बच्छावत परिवार

पुत्र-पुत्रवधु : रमेशचन्द-निर्मला, हेमचन्द-शोभा, प्रदीप-सुनीता, रविन्द्र-सीमा, मनोज-आरती, संदीप
पुत्री-जंवाई : स्नेहलता-नन्दकिशोर जी कोटड़िया पौत्र-पौत्रवधु : सुशील-निकीता, राहुल, गौरव-निधि
यश, भावित, हितम्, हार्द्धिक, विभव पौत्री : कुसुम, सुमन, प्रिया, भूवि

स्थान : ओसवाल न्याति नोहरा, राईका बाग, फलोदी-342301 (जिला जोधपुर)

सम्पर्क सूत्र : हेमचन्द-9414418354, प्रदीप-9414418366, रविन्द्र-9414562964, मनोज-9414418334

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408